श्री-चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

जल-समाधि

श्री अमर

२०।८।६२

नवरत्न ग्रन्थमालाक २७ म पुष्प

जल समाधि

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

एम्० एल्० एकेडमी

लहेरियासराय, दरभंगा

नवरत्न गोष्ठी

मिश्रटोला

दरभंगा

मूल्य—१. ५०

प्रकाशन वर्ष--१९७२ ई०

पहिल संस्करण १०००

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

नवरत्न गोष्ठी,

मिश्रटोला, दरभंगा,

ग्रन्थालय, टावर चौक, दरभंगा,

शिव पुस्तक भवन, टावरचौक, दरभंगा

मुद्रक—तिरहुत प्रिन्टिंग प्रेस, लहेरियासराय।

जनिक अनुशासन प्रियता स्वयं अनुशासित रहबाक शिक्षा देलक,
जनिक कर्त्तव्य परायणता कर्त्तव्यक प्रति जागरूक रखलक,
जनिक समय-निष्ठता कर्मठ बनौलक,
'अधीतमध्यापितमर्जितं यशः' वाक्यक प्रतिमूर्त्ति,
शिक्षा जगतक अविस्मरणीय व्यक्तित्व



श्रीयुत झिंगुर कुमरजी क

कर-कमल मे

सादर समर्पित-श्रद्धासुमन

श्रद्धानत

१२-२-७२ **श्री अमर**

परिचय



चिर परिचितक परिचय की देल जाय ? कुसुमायुधकेँ कुसुम की चढ़ाओल जाय ? दिनकेँ देखब्रालेल दीप की ? इन्द्रधनुषी रेखा पर रंग टीप की ?

दू दशक पूर्व 'वीर कन्या' उपन्यासक भूमिका मे अमर जीक परिचय प्रसंगक पंक्ति थिक 'कौलिकेँ ई वैयाकरण, वृत्तिएँ शिक्षक, रुचिएँ कवि एवं साधनेँ पत्रकार ओ परिमार्जित शैलीक लेखक – अमरजीक परिचय एक वाक्य मे यैह देल जा सकैछ।' आब पुनि ओहि मिथिला-मैथिलीक क्षितिज पर पूर्वोदित चन्द्रक कलावंकिमा जखन आइ पूर्णिमाक प्रौढ़िमा प्राप्त कय चुकल अछि तखन एक नहि अनेकहु, वाक्य नहि महावाक्यहु मे परिचय अपूर्ण होयत। वस्तुतः यथार्थनामा चन्द्रक अमर रश्मि सँ मैथिलीक वर्त्तमान साहित्य सनाथ अछि। रचनात्मक दिशा सँ संगठनात्मक विदिशा धरि, साहित्य निर्माण सँ साहित्यिकक संधान-उपस्थान धरि अमरचन्द्रक प्रतिभा-प्रभा स्वयम् उद्भासित अछि।

मिथिला मैथिलीक एहन कोन आन्दोलन अछि जकर अग्रपंक्ति मे अमर जी नहि देखल गेल होथि ? साहित्यिक सामाजिक एहन कोन संस्था-आस्था अछि जाहिमे अमर जीक व्यक्तित्व नहि चमकैत हो ? काव्य-कलाक एहन कोन विधा अछि जतय अमर जी नहिं बिम्बित होथि ?

गद्य-पद्य, नाटक-एकांकी, उपन्यास-लघुकथा, व्यंग्य-विनोद, निबन्ध-आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण—साहित्य-शतदलक प्रत्येक दल पर अमर जीक रमणीयता सुरभित भेटत। जहिना लेखन तहिना वाचन, जहिना सम्पादन-प्रकाशन तहिना प्रचारण-प्रसारण, जहिना शोध-सन्धान तहिना संग्रह-संकलन—प्रत्येक समकोणक द्विभुज समतूल अछि। जतबे कलम चलित-बलित ततबे वचनहु ललित-कलित, यद्वत् सभा-सम्मेलनक मंच तद्वत् रूपचित्रक रंगमंच, यथैव परिचर्चा विद्वद्गोष्ठी तथैव गाम धरक गपगोष्ठी, जहिना पत्र पत्रिकाक स्तम्भ-कालम तहिना कथालापक प्रसर-अवसर, सबतरि एहि तेजस्वी साहित्यिकक व्यक्तित्व प्रखर-भास्वर।

बुझि पड़ैछ, मैथिलीक नवीन काल खंड मे कवीश्वरचन्द्रक प्रतिभाक प्रसाद, अपनविद्वान् पिता पण्डित मुक्तिनाथमिश्र जीक पुण्य प्रभाव, शैशव अभिभावक राजपण्डित बलदेव मिश्र जीक मुखर पाण्डित्य, गुरु पण्डित त्रिलोकनाथमिश्र जीक व्यंग्य-रंग एवं अपन वरिष्ठ शिक्षक अभिभावक श्रीझिगुर कुमर जीक कर्त्तव्यनिष्ठाक समवेत ज्योति एहि नमछड़छड़हर श्याम-अभिराम प्रतिभा सनाथ चन्द्रनाथक अमरकलेवर मे अखण्ड रूपे उद्द्योतित अछि।

माघी पूर्णिमा १९७२ श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन'
मैथिली विभागाध्यक्ष
ब्रह्मचारी मिथिला कालेज, दरभंगा

कथा ओ कथाकार

पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' केवल कवि-साहित्यकार नहि, अपितु एहन लोक-प्रिय कलाकार छथि जनिक नाम-यश समस्त मैथिली जगत मे प्रसृत अछि। बहुमुखी प्रतिभाक अवदान सँ सम्पन्न 'अमर' जी व्यवसायेँ शिक्षक छथि आ' पच्चीस वर्षक कार्य-आयाम मे सहस्रो मैथिली छात्र केँ जीवनक विभिन्न क्षेत्र मे प्रतिष्ठित करौलन्हि अछि। छात्र समुदायक जे श्रद्धा-सम्मान हिनका सुलभ छन्हि से कोनो शिक्षकक लेल स्पर्धा ओ महत्त्वाकांक्षाक विषय भऽ सकैछ। विभिन्न पद पर कार्यरत हिनक छात्रगण, हिनका द्वारा प्रदीप्त मैथिली प्रेमक अखण्ड ज्योति सँ मिथिला ओ मिथिला सँ बाहरो रहि मैथिली आन्दोलनक शत-शत दीपवर्त्तिका लेसि प्रकाश विस्तार कऽ रहल छथि। हिनक प्रेरणा ओ पथ-प्रदर्शनक अनुसरण कय अनेक प्रतिभावान, साहित्यकार ओ शिक्षक प्राध्यापकक रूप मे मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि मे संलग्न छथि।

वस्तुतः श्री 'अमर' जी मैथिली साहित्यक गौरव स्तम्भ छथि। ओना त हिनक विनम्रता स्वयं केँ मैथिलीक एक गोट सिपाही मात्र बुझैत अछि। मैथिलीक उत्थानक लेल अहर्निश चिन्तनशील ओ व्यस्त रहब हिनक स्वभाव भऽ गेल छन्हि। तथापि एहि क्रियाशीलताक फलस्वरूप साहित्यसर्जना कखनहु बाधित नहि भेलन्हि अछि। वस्तुतः रचनात्मक प्रतिभा ओ प्रचारात्मक क्षमताक अद्भुत समन्वय हिनक व्यक्तित्व केँ उद्भासित करैत अछि।

'अमर' जी प्रकृतितः कवि छथि। कोनो कविसम्मेलनक ई प्रमुख आकर्षण रहैत छथि। हिनक तीन गोट काव्यसंग्रह प्रकाशित छन्हि। 'अमर' जी ओ 'कवि' जी पर्यायवाची भऽ गेल अछि। मुदा हिनक रचनात्मक प्रवृत्ति कविताक अतिरिक्त आनो-आन साहितियक विधा केँ आत्मसात् कऽ लेने अछि। नाटक, उपन्यास, कथा, आलोचना, पत्रकारिता आदि प्रत्येक क्षेत्रँ हिनक कारयित्री ओ भावयित्री प्रतिभाक वरदान सँ समानभावेँ समृद्ध भेल अछि।

मैथिली-कथा-साहित्य निस्सन्देह अपन विकास यात्रा मे अग्रगण्य अछि। एकर सम्भावनाक प्रस्तुतीकरण मे निरन्तर नव-नव प्रयोग भऽ रहल अछि। साहित्यिक गतिशीलता सँ अवश्ये रचनाशीलता उद्दीप्त होइछ तथापि अन्ततः ओकर विशिष्ट आग्रह, अनुभूति कें सम्पूर्ण भावें अभिव्यक्ति देबा मे बाधित होइछ। आरोपित स्थितिक कथ्य, शिल्प ओ दर्शन रचनात्मकताक धरातल पर असत्य ओ अप्रतिभ सिद्ध होइछ। मैथिली मे एहनो कथा लेखक छथि जे अपन अतिरिक्त शिल्प सजगता ओ 'फार्मूला' बद्ध जीवनदृष्टिक लेल आलोचनाक हेतु बनल छथि। 'अमर' जी अपनाकें एहि अतिवाद सँ मुक्त रखने छथि तथा जीवनक जे यथार्थ अछि तकर अन्वेषण-क्रम मे वास्तविक कथा-सर्जन मे संलग्न छथि। वास्तविक कथाक अवस्थिति वस्तुतः अतिरंजना ओ छद्म सँ पृथक्, जीवनक यथार्थ मे निहित अछि। जीवन मे प्रवेश करबाक क्षमते जीवनक एहि स्वरूप कें चिन्हबाक शक्ति प्रदान करैछ।

जीवन मे यथार्थक ई अन्वेषण सैह जेना वास्तविक कथाक अन्वेषण थिक। 'अमर' जीक कथा मे अन्वेषणक इएह प्रयास परिलक्षित अछि। अनुभवक मर्म हिनक कथा कें सुवासित करैत अछि तथा समग्रात्मक प्रवृत्ति ओहि मे स्वाद जगबैत अछि। ई कथा सभ शून्य मे प्रसारित वक्तव्य मात्र नहि रहि एक अन्य समानधर्माक उपस्थितिक आभास दैत अछि। वस्तुतः कथा एवं पाठक दुनूक अवस्थिति जीवनक विडम्बना, असत्य एवं विद्रूप कें अस्वीकृत कऽ ओकरा सत्य, सौन्दर्य ओ सुरुचि सँ युक्त करैछ आ तखनहि जीवन, जीबाक योग्य बनि सकैछ। 'अमर' जीक कथाक मूल तत्त्व इएह थिकनि। एकर मूल्यबोध ओ कथात्मकता एकरा व्यक्ति-व्यक्ति सँ जोड़ैत अछि। इएह कारण अछि जें व्यक्ति पंक्ति कें स्पर्श करैत ई कथा सभ प्रत्येक व्यक्तिक कथा बनि गेल अछि।

हिनक कथा सभक गुणवत्ता कें रेखांकित करैत स्थूल दृष्टिएँ हास्य-व्यंग्य-प्रधान एवं गम्भीर-विचार-प्रधान पहि दू कोटि मे राखल जा

सकैछ। प्रस्तुत कथा संकलन दोसर कोटिक थिक। गम्भीर कथा सभ मे वस्तुक उपस्थापन ओ शिल्पविधान मे वक्रताक अपेक्षा सहजता कें विशेष प्रश्रय देल गेल अछि। एहि कथा सभ मे कथ्यतत्त्वक सहज प्रेषण ओकर स्वाभाविक धर्म बनि गेल अछि। वस्तुतः यदि शिल्प संयोजना मे कथ्य आच्छन्न भऽ जाय त कथाक उद्देश्ये निरर्थक भऽ जाय।

कथाक सत्य कें इतिहासक सत्य सँ विशेष व्यापक ओ सार्थक कहल गेल अछि। 'अमर' जीक कथा सभ एहि तथ्य कें चरितार्थ करैछ।

कथा-रचना, 'अमर' जी दीर्घकाल सँ करैत रहलाह अछि आ' ओ सभ पत्र-पत्रिकाक माध्यमे पाठक लोकनि धरि पहुँचैत रहल अछि। 'जल-समाधि' तकरहि आंशिक संकलन थीक। एकर अवगाहन मैथिली कथा मे रुचि रखनिहार प्रत्येक पाठक कें प्रमुदित करत, संगहि एक गोट कथा-कारक रूप मे 'अमर' जीक मूल्यांकनक सुयोग उपस्थित करत। हम एकर स्वागत करैत छी।

डा० श्री शैलेन्द्र मोहन झा
रीडर मैथिली विभाग, बिहार बिश्वविद्यालय
चन्द्रधारीमिथिला कालेज
दरभंगा।

माघी पूर्णिमा संवत २०२८
३० जनवरी १९७२

कथा-क्रम

कथा व्यथा

रमेश कुर्त्ता पैजामा पहिरलक, पैरमे चप्पल लटकौलक। निश्चय कतहु जयबाक छलैक, किन्तु कतऽ से निश्चय नहिं कऽ पौने छल। अनिश्चयात्मकताक एहि स्थितिमे किछु क्षण विलम्बाक हेतु माथक छिड़िआयल केशकें ककवा सँ ठीक करऽ लागल, मुदा ओहिमे कतेक समय बीति सकैत छलैक ? अविलम्ब ओकरा निश्चय करबाक छलैक गन्तव्य स्थान।

पन्द्रह अगस्त लगिचायल जा रहल छलैक आ पत्रिकाक विशेषांकक हेतु कोनो काज नहिं भऽ सकल छलैक। कतेको लेखक, कवि, कथाकार, निबन्धकार, राजनीतिकपर्यवेक्षक आदिसँ सम्पर्क करबाक छलैक आ से सभ अपनहिं पैरें घूमि कऽ करबाक छलैक। एकटा साधनहीन पत्रकारकें एहि सँ अधिक भौतिक संबल की भऽ सकैत छलैक। रमेश साधनहीन छल अवश्य, किन्तु साधनाहीन नहिं। ओ साधन, साहस आ विश्वासक बल पर पत्रकार बनबाक, निर्भीक पत्रकार बनबाक दुस्साहस कयने छल।

मानसिक समस्त उल्लास चिन्तासँ व्यस्त मानसमे आगिमे पड़ल स्पिरिटक काज करैत छैक, जेना आगिक

संयोग होइत स्पिरिट धू-धू कऽ जरि उठैत छैक आ कोनो उपचार ओहि अग्निक शमन करबामे विफले होइत छैक।

अभावक स्थिति उत्पन्न भेला उत्तर मनक अभिलाषा कोशीक बाढ़िसँ आक्रान्त क्षेत्र-स्थित माटिक भीत जकाँ अनेरे सहरि-सहरिकऽ धराशायी भऽ जाइत छैक।

गरीबीक दुनू पाटक बीच पड़ि मानव-मनक समस्त कल्पना, भावना, कामना मैदोसँ मेही भऽ पिसा जाइत छैक। यदि कोनो पिता अन्नक अभावक कारणें झामर भेल मुखमण्डल आ फुफड़ी पड़ल ठार अपना सन्तानक अपन आँखियें देखैत अछि तँ ओकर सम्पूर्ण धैर्यक चट्टान बालुक भीत जकाँ खहरि-खहरि दहा जाइत छैक। आदर्श विडम्बना बूझि पड़ैत छैक, सिद्धान्त प्रवंचना बुझना जाइत छैक आ सत्यक ठोस धरातलपर ठाढ़ वर्त्तमान दुर्लंघ्य पर्वत आ भविष्य अथाह समुद्र बूझि पड़ैत छैक।

मनुष्य आखिर मनुष्ये थिक, कोनो मशीन नहि। मशीनो गरम भऽ गेला पर किछु क्षण विश्राम चाहैत अछि, तखन मनुष्य तँ हाड़-मांसक बनल एक ठट्ठर मात्र थिक। नहि बेसी तँ कमसँ कम भरि पेट अन्न, भरि देह वस्त्र आ एहि साढ़े तीन हाथक शरीरकेँ लम्बायमान करबाक हेतु साढ़े चारि हाथ भूमि, जे रौद-शीत-अन्हड़-बिहाड़ि-पानि-पाथरसँ ओहि शरीरक रक्षा कऽ सकैक, प्रत्येक मनुष्यकेँ

अवश्य चाहिऐक। एहिसँ अधिक चाहनिहार भलें सिंयाख करैत हो, किन्तु एतबा तँ अनिवार्य छैक।

अपन पुरुषार्थ पर भरोस रखनिहार जीवनमे अयनिहार कोनो संकटसँ सघर्ष करबाक अद्‌भुत उत्साह रखैत अछि। विघ्न बाधासँ लड़बाक हेतु, जेना कोनो पहलमान नित्य शारीरिक व्यायाम कऽ अपन प्रतिपक्षीकेँ परास्त करबाक मनसूबा बन्हैत रहैत अछि, तहिना मानसिक व्यायाम करैत बिघ्न पर विजय प्राप्त करबाक उत्साह अन्तरमे जुटबैत रहैत अछि, किन्तु भूखल सन्तानक मुँह देखि अपन पुरुषार्थक समक्ष बहुत पैघ प्रश्न-वाचक चिह्न आबि ठाढ़ भऽ जाइत छैक। ताहूमे यदि ओ कलाकार हो। कलाकारक दोसर अर्थ होइत छैक स्वाभिमानी। अन्तरसँ कलाक प्रति जकरा सहज स्नेह छैक ओ कोनो मूल्यपर अपन स्वाभिमानकेँ धक्का लागऽ देब स्वीकार नहि कऽ सकैत अछि। स्वाभिमानक हत्या कलाक हत्या थिक आ कलाक हत्या माने कलाकारक हत्या, किन्तु स्वाभिमान पर सभसँ भयंकर आघातो लखने लगैत छैक जखन ओकर अपन सन्तति अन्नक अभावमे ओकर स्वाभिमानक उपहास करऽ लगैत छैक।

देशपर उमड़ैत चारू भागसँ संकटक मेघकेँ छिन्न-भिन्न करबाक हेतु उत्साहक बिहाड़ि चाही। आन्तरिक कलहाग्निकेँ मिझयबाक हेतु एकताक जल चाही। अभावक

ओहिकें उपाड़ि कऽ फेकि देबाक हेतु परिश्रमक कोदारि चाही आ एहि सभ भावनाकें उद्बुद्ध करबाक हेतु ओजस्वी साहित्य चाही। येह सभ सोचि रमेश एहि वर्ष आबऽ वला स्वतन्त्रता दिवसक उपलक्षमे एक एहन अंकक सम्पादन ओ प्रकाशनक योजना दू मास पूर्वं बना लेलक अछि। धमनीमे दौड़ैत रक्तमे बिजुली उत्पन्न करऽअला विचार-प्रधान निबन्ध, अन्तरक तारकें एक बेर झनझना देबऽवला कविता, रोम रोममे स्फूर्त्ति भरि देबऽवला कथा, मर्मकें वेधि देबऽवला व्यंग्य आदि सामग्रीसँ ओहि अंककें ओ सजाओत। ओ ओजस्वी कथाकार, तेजस्वी कवि, मनस्वी लेखक आदिक सूची बना चुकल अछि।

आइ ओ सभसँ पहिने एक एहन कथाकारक दुआरिपर पहुँचल जे अपन पुरुषार्थक भरोसपर आइ धरि अपना स्वाभिमानकें आहत नहि होअऽ दऽ सकल अछि। केबाड़ बन्द छैक। जेठक प्रचण्ड आतप कणकण केँ कंसारक बालु जकाँ धिपा कऽ छोड़ि देने छैक। एहन समय यद्यपि ककरो दुआरिपर जायब अनसोहाँत लगैत छैक, गेनिहारोकेँ आ घरवैयोकेँ, किन्तु कार्यव्यस्त मनुष्य एहने समयमे निश्चिन्त भऽ भेटो दैत छथिन। अंगारजी एहने एक व्यस्त कलाकार थिकाह जे भौतिक सुख-सुविधासँ वंचित रहितो अपन कलाक समुचित विकास आ स्वाभिमानक रक्षाक हेतु कोनो मशीनसँ ड्यौढ़ा दुन्ना खटैत रहैत छथि।

रमेश द्वारा खटखटौला पर जखन केबाड़ी फुजलनि तँ अंगारजीक विवर्ण मुख मण्डल देखि रमेशकेँ अपना आँखिपर विश्वासे नहि भेलैक / अनुखन प्रसन्न चित्त, दीप्त मुखाकृति, विनोदमय वार्त्तालापक अभ्यासी अंगारजी पझाइत अंगार पर पड़ल छाउड़क ममरी जकाँ स्याह किएक छथि ?

रमेशक मुखमण्डलपर अंकित होइत ई प्रश्नवाचक चिह्न अंगारजीक दृष्टिसँ इरो। नहि रहि सकलनि। अंगार जी, आउ आउ रमेश बाबू ! चकित होयबाक कोनो काज नहि वहैत हाथ पकड़ि कऽ केबाड़ीक भीतर घीचि लेलथिन आ बाहरमे पछबाक घोड़ापर चढ़ल इन्सपेक्सन करैत झरकीसँ अपन घरक रक्षाकरक हेतु चट दऽ केबाड़ लगा लेलनि।

—कोमहर अयलहुँ ?

—इच्छा भेल, आबि गेलहुँ।

—इच्छा भेल किएक ? बिनु कारणे टिटही नहि लगैत छैक।

—कुशल क्षेम, हाल चाल, मूड, गतिविधि, लिखब-पढ़ब आदि अनेक बातक जिज्ञासा भेल। सोचलहुँ जे एखनुक समय अहाँ अवश्य गामपर पकड़ायब, तेँ चल अयलहुँ।

—कुशल क्षेम ? कुशल क्षेम ई जे मटिया तेल नहि भेटला क कारणेँ अन्हारेमे धर्मपत्नीजी कोनो वस्तु लाबऽ घर गेलीह आ सूतल बच्चाक देह पर पैर पड़ि गेलनि। बच्चाक ठेहुन दू टुकड़ी भऽ गेलैक आ अपने जे चौंकि कऽ खसलीह

से चौकठिसँ कपार टकरयलनि आ कपार दू फाँक भऽ गेलनि। अपने ओगरने छी घर आ कोटामे आयल अन्न लुटि लैत छथि मुखिये, डीलर, हाकिम। दू साँझसँ अन्न नहि रहलाक कारणेँ नेनासभ भूखेँ कनैत-कनैत सूतल अछि। हमरा विश्वास अछि जे एक एहि उत्तरसँ अहाँकेँ कुशल क्षेम, हाल चाल, मूड, गतिविधि, लिखब पढ़ब सभ जिज्ञासाक पूर्त्ति भऽ गेल होयत। आब अहाँ अपन प्रयोजन कहू। अंगारजीकेँ दृढ़ विश्वास छनि जे रमेरा बिनु प्रयोजने कतहु जायबला जीव नहि थिकाह।

किन्तु रमेश अंगारजीक करुण दशा देखि योजनाकेँ मनेमन घोंटि लेलथि तँ वस्तुतः परिश्रम निष्फल होइतनि तेँ अपन विशेषांकक योजना कहि सुनौलथिन—एकटा कथा।

—बुझलहुँ अहाँ पत्रकार थिकहुँ। चिन्तक थिकहुँ। देशक सम्पूर्ण गतिविधिपर सूक्ष्म दृष्टि निक्षेप करैत ओझरायल समस्या सभक समाधानक हेतु अनुखन उद्विग्न रहैत छी, उत्कंठित रहैत छी, आकुल व्याकुल रहैत छी। अहाँ अपन कलमक नोकसँ अजस्र उत्साहक स्रोत प्रवाहित कऽ देश ओ समाजक समक्ष उपस्थित सभ विषमताकेँ धो धा कऽ निष्कलुष, निर्मल ओ निरापद बनयबाक धुनिमे जेठक एहि प्रचण्ड दुपहरमे दुआरि-दुआरि अलख जगाय रहल छी, किन्तु सम्पूर्ण उत्तरदायित्व शपथपूर्वक जे ग्रहण कयने छथि से शीत-ताप-नियन्त्रित भवनमे खसक टट्टी तर बैसल

स्वभविषयक योजनामे मस्तिष्ककें नियोजित कयने छथि। की ई समस्या नहि थिक; की ई विषमताक उद्गम स्थल नहि थिक, की एकर निराकरण अहाँक पत्रकारक कलम करबाक सामर्थ्य रखैत अछि ? नहि, कथमपि नहि। तथापि अहाँकें कथा चाही। एहन कथा जे देशक सूतल पौरुषकें थापड़ मारि चेहा देअय, किन्तु आजुक कथा स्वयं व्यथाक साकार रूप ग्रहण कयने जा रहल अछि। अन्न-वस्त्र विहीन जन-समुदायक मानसमे आन भरबाक प्रयास ओहिना विफल होयत जेना चालनि मे पानि भरब। तथापि अहाँकें कथा चाही। आइ सम्पूर्ण समाजक व्यथा वृहत्कथाक आधार बनल अछि। घर-घरमे पसरल हाहाकार, आत्मा-आत्मामे औनाइत चीत्कार कथा नहि तँ आर की थिक ? व्यक्ति व्यक्तिक अन्तरसँ बहराइत दीर्घ निश्वास अपना संग एक-एक कथा वस्तु लऽ कऽ निःसृत होइत अछि। तेँ अहाँकें कथा भेटत, किन्तु कथाकारक अकुलाइत प्राणकें की चाही से अहाँ सोचू।

अंगारजी अपन दीर्घ भाषण समाप्त कयलनि। मुख मण्डल पर आत्मकथ्यक थकान स्पष्ट भऽ गेल छलनि। सहसा ध्यानमे अयलनि जे रमेशकें बड़ 'बोर' कऽ देलि-यैक अछि। ओ भारिआयल वातावरणकें हल्लुक करैत बज-लाह बेस, बन्धु ! आब ई कहू जे विशेषांकक हेतु अर्थ व्यव-स्थाक की जोगाड़ भयलक अछि ?

जोगाड़ की ? विस्मित रमेश अंगारजीक दिस तकल-थिन तँ अंगारजी बाजि उठलाह—ऐइ कोनो नेताक फोटो सहित प्रशस्ति, जीवनपरिचय, अभिनन्दन अथवा कोनो एले-क्सनियाँ नाराक उछाही। गुप्त पुरस्कार तँ पत्र सभ कँ एहिना भेटैत छैक। अहाँ तँ कोनो तेहन काँच माटिक बनल छी नहि, हम तँ जनैत छी जे कोन तरहेँ अहाँ पत्रिका चला रहल छी। तखन एहि विशेषांकक प्रकाशन दुस्साहसे थिक। से कोन बल पर ?

रमेश पहिने तँ विक्षुब्ध भेला, किन्तु अन्तिम वाक्य सुनैत सुनैत विक्षोभ किछु शान्त भऽ गेलनि। बिनु किछु बज-नहि अपन बामा पहुँचा देखबैत मुँह दिस तकलथिन।

अंगारजीं रमेशक घड़ी शून्य पहुँचा देखि चकित रहि गेलाह। विस्मित होइत कहलथिन की अहाँ घड़ी बेचि लेल ?

दोसर उपाय ? रमेश बजलाह स्वाभिमानक रक्षा ओ आकांक्षाक पूर्ति हेतु आर उपाय की छल ? मातृभाषाक सेवक लोकनि मे अधिकांशक तँ यैह हाल रहलनि अछि। इतिहास उनटा कऽ देखू। भने आजुक छौंड़ा सभ गारियें पढ़ौक। एतबा कहैत रमेश उठि कऽ विदा होअऽ लगलाह तँ अंगारजी भरि पाँज पकड़ि बैसबैत कहलथिन - हम अहाँ एके ट्रेनक यात्री छी। हमर जे योगदान अहाँ चाहब से भेटत। एतबा कहैत कहैत अंगारजीक आँखिक कोर सिक्त भऽ गेल छलनि।

—०—

प्रतिक्रिया

कहबाक इच्छा तँ होइत अछि, किन्तु चाहितो नहि किछु कहि पबैत छियइ । आजुक युग-जमाना बड़ा विचित्र भऽ गेलैक अछि । सम्बन्धक पवित्रतापर आजुक मनुष्यकेँ विश्वास रहिये ने गेलैक अछि । एकक प्रति दोसर सतत शंकालुए बनल रहैत अछि । मनुष्यक सभ्यता द्रुतगतियेँ विकसित भऽ रहलैक अछि । आजुक मनुष्य अपन बुद्धिक बलेँ प्रकृतिपर ताहि रूपेँ आधिपत्य स्थापित कयने जा रहल अछि जे एकर अइं एकरा अपने खयने चल जा रहल छैक आ एकरा भीतर निवास करैत मनुष्यता किकिहारि मारि रहल छैक । तखन पवित्रता नामक वस्तुसँ बाहरी आडम्बर छोड़ि आन्तरिक स्वच्छताक बोध कोना होउक ?

जेना पैघ पैघ नगरमे भूगर्भ दऽ कऽ बड़का-बड़का मोड़ी बहैत छैक; ओकरा भीतरमे दुनियाँ भरिक पूतिप्रवाह अनवरत बहैत जाइत छैक, ओहिमे अगणित पिलुआ जन्म लैत अछि, पोषित होइत अछि आ ओहि सड़ल गन्हाइत प्रवाहमे अपनाकेँ पूर्ण सुखी बुझैत रहैत अछि, ओकरो अपना प्राणक प्रति ओहने ममत्व रहैत छैक जेहन ममत्व हम तोँ अर्थात मानव जाति अपना प्राणक प्रति पोसने रहैत छी, फेर ओहि मोड़ीक

ऊपर सिमटीक जमाओल अथवा पाथरक बनाओल चिक्कन साफ झँपना सन लागल रहैत छैक। आ ओहिपर दऽ चलनिहार लोकके भितरका सड़ल पूतिप्रवाह अथवा ओहिमे जन्म लेने असंख्य पिलुआक कोनो पता नहि रहैत छैक। ठीक तहिना आजुक भौतिकवादी सभ्यतामे पालित मनुक्खक स्थिति छैक। ऊपरसँ सभ्यतारूपी ओहि सिमटीवला झँपनासँ झाँपल अछि आ ओकरा अन्तरमे कलुषमय विचारक गन्दगी बहि रहल छैक आ मनोविकारक पिलुआ ओहिमे सहसह करैत रहैत छैक।

लगैत अछि जे तोँ हमर दुर्बलता बनि गेलाह अछि। हँऽ एकरा दुर्बलता छाड़ि आर किछु नहि कहल जा सकैत छैक। ओना तँ एहि छोट सन जीवनमे कतेक लोक आयल, कतेक लोक गेल। जेना मनुक्खकेँ क्षणिक सुख-दुःखक अनुभव होइत छैक, हमरो भेल, मुदा तोँ जखन एहि ठामसँ चल जयबाक चर्चा करैत छह तँ हमरा अन्तरमे बिहाड़ि अयबाक पूर्व जेना स्तब्धता व्याप्त भऽ जाइत छैक, तहिना भऽ जाइत अछि आ बूझि पड़ैत अछि जे तोहर डेग ओमहर उठतह आ हमर अन्तरक स्तब्धता बिहाड़ि बनि ने जानि हमरा कोनो वृक्ष जकाँ कतऽ लऽ जा कऽ धराशायी कऽ देत। तकर बाद हमर की होयत ?

ई सर्वविदित आ साधारण बात छैक जे ई संसार स्वार्थी अछि। जखन पिता पुत्रक सम्बन्धो मे आंशिक स्वार्थ रहैत छैक तखन भाइ-भाइ, मित्र-मित्र, पति-पत्नी आदिक

सम्बन्ध जँ स्वार्थक भित्ति पर ठाढ़ रहैत छैक तँ से कोन आश्चर्यक बात ? गुरु शिष्यक बीच तँ आइ सम्बन्धकेँ कोनो मान्यतो नहि छैक।

मुदा हम जखन तकैत छी जे हमर सेवा मे तोहर की स्वार्थ भऽ सकैत छह तँ किछु देखि नहि पड़ैछ। एहि सेवाक प्रतिदान रूपमे हम ने किछु देलियह अछि आ ने देबाक कोनो योग्यते अछि। तखन लाज होइत अछि, बूझि पड़ैत अछि जे हम बहुत पैघ स्वार्थी छी।

तोहर कहब यैह छह कि ने, जे ई गांधी जी द्वारा निर्मित युग थिकैक। आजुक लोककेँ सेवा-धर्म अपनयबाक चाहिऐक। मानवताक सेवा। मुदा हमरो जन्म तँ एही युगमे भेल अछि। हमरो तँ सेवा धर्म अपनयबाक चाही। तखन एकदिसाहे सेवा लेनिहार तँ अवश्य पापक भागी होयत। मुदा हम छी जे एकदिसाहे सेवा लेने चल जा रहल छी। तखन यदि संसार हमरा पापी कहय, स्वार्थी कहय तँ तकरा अनुचित कोना कहल जा सकैत छैक ?

भारतीय शास्त्रमे (यद्यपि आजुक युग मे शास्त्रक गप्प करब पिछड़ल-पछुआयल लोकक लक्षण मानल जाइत छैक लिखल छैक जे वंश दू प्रकारक होइत छैक विद्यासँ आ जन्मसँ (वंशो द्विधा विद्यया जन्मना च) ताहूमे शास्त्रकार विद्यावंश केँ प्राथमिकता देने छथिन। मुदा हमर भारतवर्ष अछि जे आजुक युग मे ओहि दिश तकबो ने करैत

अछि जाहि दिशामे सूर्य उदित होइत छथिन आ संसार प्रकाशमान भऽ उठैत अछि, अपितु एकर आँखि ओहि दिश लागल रहैत छैक जेमहर सूर्य डुबैत छथि आ चारू भाग अन्धकार पसरि जाइत अछि। येह एकर आदर्श छैक, एही मे ई अपन उत्थान बुझैत अछि, एही मे जीवनक सार्थकता बुझैत अछि। आ तोरो जन्म एही भारतमे आ एही युगमे भेल छह, पुनि तोरा हृदयमे यदि कोनो भ्रान्ति होअह तँ स अस्वाभाविक नहि कहल जा सकैछ। तेँ हमरा अपन स्थिति स्पष्ट कऽ देब आवश्यक प्रतीत भेल।

तोरा आँखिमे ई नोर किएक छह? हमरा तोरा प्रति कोनो अविश्वास नहि अछि, किन्तु भ्रान्ति तँ पूछिकऽ नहि होइब छैक। आ तँ जेना लोककेँ चोरा छूबि दैत छैक आ अकस्मात् पीठ मे दर्द होअऽ लगैत छैक तहिना अकस्मात् भ्रान्ति उत्पन्न भऽ जाइत छैक आ मानसिक दर्द आरम्भ भऽ जाइत छैक।

हमरा होइत अछि जे हम तोरा संग अन्याय करैत छियह। ताँ कखनो अकच्छ भऽ जयबाक पूर्ण अधिकारी छह, मुदा हम पहिने कहि चुकल छियह जे ताँ हमर दुर्बलता थिकाह। प्रातःकाल सूति कऽ उठला उत्तर पहिल शब्द हमरा मुँह सँ बहराइत रहल अछि—'गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे'। आब एहि संग हमर आँखि कूदिकऽ तोरा खिड़की पर चल जाइत अछि आ जखन तोहर मसहरी तनले देखैत छियह तँ मोनमे होइत अछि 'गोविन्द एखन धरि सुतले अछि। एखन

परीक्षा चलि रहल छैक। प्रायः वेसी राति धरि पढ़ैत रहल होयत। सबेरे निन्न नहि टुटतैक तँ परीक्षा भवन जयबामे देरी भऽ जयतैक। फेर आँखि घड़ी पर दौड़ि जाइत अछि।

अरे राम ! छौ बजबा मे बीसे मिनट बाँकी छैक। साते बजे सँ परीक्षा छैक। हड़बड़ मे तैयार भऽ परीक्षा भवन गेला पर चंचल बुद्धि रहने गड़बड़ होयबाक सम्भावना रहैत छैक।

हमर तँ नेना सँ अभ्यास रहल अछि सूर्योदय सँ पहिने उठि जाइ। हमर पिताजी कहल करथिन जे प्रकाशपुंज सूर्यक उदय भेलो उत्तर जे सुतले रहैत अछि तकरा पर कृपा करैत काल सरस्वतीयो ओंघाय लगैत छथिन।

हमरा तँ पिताजीक पूजाक हेतु फूल, बेलपात, दूबि, तुलसी तोड़िकऽ आनव अनिवार्य रहैत छल। सूर्यक प्रथम किरण बुद्धि रूपी धरतीक हेतु खाद थिकैक। ई खाद जे अपना बुद्धिक खेतमे नहि देलक तकर खेत उसर किएक नहि होयतैक ? हमरा फूल तोड़बाक लाथेँ सूर्योदय सँ पूर्व उठऽ पड़िते छल। ओ संस्कार बनि गेल अछि। पूजा तँ हमर बाबूजी करैत छलाह, हम तँ ओही संस्कार वश ओ विधि पूरा करैत छी। तेँ जकरा सूर्योदय कालमे सूतल देखैत छिऐक, इच्छा होइत अछि तकरा उठा दिऐक, मुदा सभ की ई पसिन्न करत ?

तोँ अवश्य पसिन्न करबह, नहियोँ पसिन्न करह, तथापि तोरा जगा देबाक बहुत इच्छा होइत अछि। एहू तरहेँ

तोहर कयल सेवाक किछु प्रतिदान दऽ सकियह, मुदा जनैत छह, शरीरक ई असमर्थता मोनकेँ छटपटा दैत अछि। सोचऽ लगैत छी—आइ ई शरीर एहन भऽ गेल जे अपन भार वहन अपने नहि कऽ सकैत अछि। एहन शरीर भार थिक, एहन जीवन अभिशाप थिक।

तोरा नहि बुझल होयतह। हमरा परिवारक जे सदस्य हमरा संग रहि रहल छथि, आइ धरि एना ओछाओन धयने नहि देखने छलाह। स्वावलम्बी जीवन बितौनिहारकेँ जखन एना अनकर मुँह ताकऽ पड़ैक तँ तकर मानसिक व्यथा क्यो सहृदय अनुमान कऽ सकैत अछि।

बैसल-बैसल, नहि नहि, पड़लो पड़ल किछु पढ़ि लेब हमरा आँखिकेँ अनसोहाँत लगैत छैक, बाँहि एकटा दैनिको पत्रक भार उठयबाक हेतु प्रस्तुत नहि। तखन होइत अछि जे तोँ रहितह तँ पढ़िकऽ सुना दितह।

तोँ परीक्षा भवनसँ अबैत छह आ हमरा बिनु कहनहि अखबार बाँचिकऽ सुनाबऽ लगैत छह। तखन होइत अछि जे परीक्षार्थीक समय अमूल्य होइत छैक। एखन तोहर समय लेब तोरा प्रति अन्याय करब थिक। इच्छा होइत अछि, कहि दियह जे आब पढ़ह गऽ, मुदा नहि कहैत छियह। नीक जे लगैत अछि समाचार सभ सुनैत!

एतबे नहि, तोरा हमर चिन्ता रहैत छह, डेरामे तरकारी छैक कि नहि? डाक्टरसँ दवाइ दऽ पूछब आवश्यक। चीनीक

बाइस] [जल समाधि

शर्वत पीवऽ कहने छथि। चीनी दुर्लभ छैक। ऊपर तँ पातालोसँ करबाक अछिये। ई चिन्ता तोरा किएक? के कहैत छह एकर चिन्ता तोँ करह। मुदा तोरा चिन्ता रहैत छह। एक परीक्षार्थी केँ परीक्षाक चिन्ता छोड़ि सर्वथा निश्चिन्त रहबाक चाहिऐक। से जनितो ई निरर्थक चिन्ता बेसाहब से किएक? मुदा तोँ से बेसाहने रहलह।

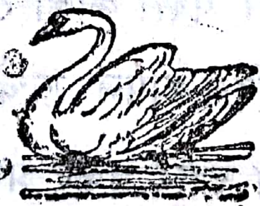
तोँ विश्वास नहि कऽ सकह, मुदा सत्य यैह थिकैक। एकान्त क्षणमे पड़ि गेला उत्तर आँखि सजल भऽ उठैत अछि। होइत अछि—हमरा पूर्वजन्मक कोनो सम्बन्ध अछि, अवश्य आइ यदि ललिताक भाय जीवैत रहितैक तँ तोरे वयसक तोरेसन स्वस्थ, तोरेसन गोरनार, नंग धड़ंग पाँच हाथक भऽ गेल रहैत। आ तखन होइत अछि जे प्रायः ओकरे दोसर रूपमे भगवान हमर सेवा करबाक हेतु तोरा पठा देलथुन अछि।

तोहर परीक्षा समाप्त होइत छह। तोरा गाम जयबाक छह। जयबैक चाहियह। पैसो कौड़ी तँ सधिये गेल होयतह। दबाइक दाम तँ ओहि दिन अपने खर्चमेसँ दऽ देने छलहक। हम तँ ओछाओनसँ उठले उत्तर तकर प्रबन्ध कऽ सकब।

तोँ हमर मानसिक प्रतिक्रिया जानऽ चाहैत छह? तोहर जयबाक कार्यक्रममे कोनो व्यवधान उपस्थित करब हमरा हेतु कोना सम्भव भऽ सकैत अछि? यदि से करबाक चेष्टा हम

करैत छी तँ हमर स्वार्थ हमरा अपने आँखिमे गड़ ऽ लागत।
किन्तु प्रतिक्रिया आन भ ऽ की सकैत अछि ?

दशरथकें रामक वियोगक अवधि निश्चित छलनि, किन्तु ओ प्राणधारण नहि कऽ सकलाह। हम तँ अनन्तकालक हेतु से सहि चुकल छी। तथापि प्रतिक्रिया स्वरूप करुणा, अजस्र करुणा, अन्तश्चेतनाकें भसियौने चल जाइत अछि। अपने ओहीमे डूबि जाइत छी। डुबले रहलामे सुखक अनुभव होइत अछि। अपनोकें बिसरि जाइत छी. पुनि संसारकें बिसरब तँ स्वाभाविके थिक। मुदा ईकी ? अपनाकें बिसरितो, संसारकें बिसरितो आइसँ तीस वर्ष पहिलुक ओ घटना जहिया ललिता भायक मृत्युपर आङनमे ओंघड़ाइत छलि, तोरा देखिकऽ मिथ्या बूझि पड़ैत अछि।



Scanned by CamScanner

सुराही

कवीजी! कनेक सुनू तँ। कविजीके भद्रतावश समीप जाय पड़ैत छनि। ई बूझैत छथिन जे ई कोनो काजक गप्प नहिएँ पुछताह। जँ पुछताह तँ यैह सभ जे कटहरक गाछ कोना जनमैत छैक? धानमे पानिकेँ रहब किएक आवश्यक होइत छैक? आम गरमीमे किएक फड़ैत छैक? सजमनिक लत्ती किएक होइत छैक; गाछ किएक ने होइत छैक? गेनाक फूलक गाछ कनैल करबीर आदि जकाँ एके साल रोपने अनेक साल धरि किएक ने रहैत छैक? एकादशीक प्रातेसँ पुनः चौदहो दिन, दिनमे दू बेर चारि बेर, जाहि बेर भेंट भेल ताहि बेर एकादशी कहिया होयतैक? एहने एहने प्रश्न पुछैत रहैत छथिन, किन्तु वयसेँ अपनासँ दुन्ना छथिन, आन प्रदेशसँ आबि एतऽ बसि गेलथिन अछि। कहाँदन अखिल भारतीय ख्यातिक एक वैरिष्टर, जे अखिल भारतीय ख्यातिक नेता सेहो छलाह, तनिकर मुंशी छलथिन। उर्दूक शतावधि शेर कण्ठमे रखने छथि। जखन कोनो गप्प करऽ लगैत छथि तँ ओहि शेर सभक पुट दऽ कऽ गप्पकेँ चासनी चढ़बऽ लगैत छथिन। बालक एक उच्च सरकारी पदाधिकारी छथिन। सम्भ्रान्त परिवार छनि। तँ एहन वयोवृद्धक उपेक्षा करब कविजी

अभद्रता बुझैत छथि। तेँ केहनो अगुतायल रहैत छथि, आवश्यक काजमे लागल रहैत छथि, किन्तु मुंशीजी जँ कहल-थिन—कवीजी, कनेक सुनू ताँ जाइये पड़ैत छनि।

एखन गर्मीक छुट्टी छैक। बेटा पुतोहु, पौत्र पौत्री सभ दार्जिलिंग गेल छथिन पिकनिकमे। मुंशीजी एकसरे छथि। बेटालोकनि एक मासमे घूरिकऽ अबबाक सूचना दऽ देने छथिन। मुदा जहियासँ बेटा लोकनि गेलथिन अछि तकरा प्रातेसँ कविजीकेँ एक प्रश्न आरो बढ़ि गेलनि अछि—आइ कोन तारीख थिकैक, आब मास लगबामे कतेक दिन बाँकी छैक ?

आइयो जखन मुंशीजी कहलथिन कवीजी कनेक सूनू तँ कविजीक मोन खौंझा गेलनि। आङनमे एकटा नेना दुःखित पड़ि गेलनि अछि, ओकरा अनेक उपद्रव सभ शुरू भऽ गेल छैक, एखन धरि तँ होमियोपैथी औखद करबैत छलथिन, मुदा आइ बूझि पड़ैत छनि जे बिनु एलोपैथी औखदेँ नेनाक जान नहि बचतैक। एलोपैथी डाक्टरक फीस भारी, दबाइक दाम सेहो बेस महग आ कविजी कविये जी छथि—सरस्वतीक अनन्य उपासक। लक्ष्मी हिनका दिस कनडेरियों जँ तकथिन तँ कदाचित आँखि डेर ने भऽ जाइनि। आ एखन तुरन्त कमसँ कम तीन टा दस टकही तँ चाहबे करी।

आर्थिक विपन्नता मनुष्यकेँ खटखटाह बना दैत छैक, ताहूमे जँ दुखित सुखितक बेरपर अभाव भऽ जाइत छैक तखन तँ दू चिन्ता अपनामे लड़िकऽ माथकेँ उधेसि कऽ राखि दैत छैक। एही मानसिक स्थितिमे कविजी डेरासँ बहरयलाह कि

सुनबामे अयलनि 'कवीजी कनेक सुनू तँ।' पहिने तँ एक बेर इच्छा भेलनि जे आइ हिनका बातपर कान नहि देल जाय, किन्तु भेलनि जे मुंशीजी आब पाकल आम भऽ गेल छथि। कोन दिन डंटीसँ छूटि पड़ताह तकर कोन ठेकान ? लोक जे कहैत छैक जे फल्लाँ चिल्लाँकेँ मतिभ्रम भऽ गेलनि अछि, फल्लाँ चिल्लाँ बताह भऽ गेलाह, आब आयु शेष भऽ रहल छनि से सभटा लक्षण मुंशीजीमे घटित भऽ रहल छनि। जेँ एतेक दिन हिनकर हुज्जति सहैत रहलहुँ, एतेक अनटोटल प्रश्नक उत्तर दैत रहलियनि तेँ किछु दिनुक हेतु आरो सहबे ठीक थिक से सोचि कविजी ससरिकऽ समीप जाइत छथि। मुंशीजी सोझे आङन चलबाक हेतु कहैत छथिन। कविजीक मोन आरो खौंझा जाइत छनि, मुदा चित्तकेँ पित्त घोँटि कऽ शान्त करैत छथि आ चुपचाप सोझे मुंशीजीक आङन जाइत छथि। मुंशीजी एकटा सुराही बाहर कऽ घरसँ अनैत छथि। ओ सुराही एक ठाम फूटि गेल छैक। त्रिभुजाकारक एकटा भूर भऽ गेल छैक आ चारि पाँच आङुर नमतीमे चड़कल छैक।

मुंशीजी पहिने करुणार्द्र दृष्टिएँ कविजी दिस तकैत छथिन, फेर किछु कहबाक हेतु ठोर कपैत छनि, मुदा वाणी अवरुद्ध भऽ जाइत छनि। बुकौर लागल कण्ठकेँ खूब जोरसँ खखासि कऽ साफ करैत छथि, बढ़ल हृदयक गतिकेँ शान्त करबाक हेतु जल्दी-जल्दी दू-तीन बेर सेप घोँटैत छथि तखन कहैत छथिन — ई सुराही फूटि गेल। राति धाखासँ हाथ लागि गेलैक; रच्छ

रहल जे पलङ्ङ़ीक कोन पर खसल आ गुड़ कि कऽ पलङ्ङ़ीये दिस चल गेल, ने तँ जँ नीचाँमे खसैत तँ सकचुन-सकचुन भऽ जाइत। आब एकर कोनो उपाय कऽ दियऽ।

कविजीक चिन्तायल चित्तमे एहि एक टाकाक पुरान सुराहीक औखद करबाक कोनो युक्ति नहि फुरलनि। ततकाल, बेस बेस कहि पिंड छोड़यबाक बुद्धिएँ ओहिठामसँ चललाह अछि। बाटमे मुंशीजीक कृपणतापर क्षोभ होइत छनि, किन्तु हुनक करुणाद्र आँखि स्मरण कऽ दयाक भाव सेहो जागि जाइत छनि।

एक मित्रसँ तीनटा दसटकही पैंच लऽकऽ डाक्टरक ओहिठाम जाइत छथि। लक्षण सभ बूझि डाक्टर औखदक पुर्जा लिखि दैत छथिन। लक्षण मात्र सूनिकऽ पुर्जा लिखि देला उत्तर मात्र चारि टाका फीस लैत छथिन आ तीन टाका औखदमे लगलनि अछि तेँ कविजी मुंशीजीक सान्त्वनाक हेतु एकटा सुराही सेहो एक टाकामे कीनि लैत छथि, किन्तु डेरा अबैत-अबैत अपना नोकरी पर चल जयबाक समय भऽ जाइत छनि तेँ सुराही साँझमे दऽ देबाक विचार मोनमे राखि कार्यालय चलि दैत छथि।

मुन्शीजी एहू वयसमे अपना रुचिक अनुसार अपन भोजन अपने हाथेँ बनबैत छथि। से जँ बेटा पुतोहु रहितो छथिन, तखनो हिनक अपन यैह क्रम रहैत छनि। किन्तु आइ भोजन बनयबाक समय कहाँ रहलनि अछि जे दिनेमे भोजन करितथि। आइ तँ सुराहीक कोनो उपाय करबे करताह। मुंशीजी बाहरमे एही द्वारेँ बैसल छथि जे एहि बाटेँ जे लोक चलत तकरासँ

एकर उपाय पुछबैक। दस पन्द्रह बटोहीकेँ एखन धरि पूछि चुकलथिन अछि, किन्तु कयो एहि फूटल माँटिक सुराहीकेँ रेसबाक उपाय नहि देखा सकलनि अछि।

अकस्मात् मुंशीजीक मुखपर एक प्रसन्नताक लहरि दौड़ि गेलनि अछि। ओ आङन चल गेलाह अछि एकटा खपटा हाथमे लेने। चक्कू बाहर कयलनि अछि आ सुराहीक त्रिभुजाकार भूर केँ चक्कू लऽकऽ गोल बनौलनि पुनि ओहि खपटाकेँ सिलौट पर घसिघसि ओहि भूरक नापसँ गोल बनौलनि अछि। जखन सुराहीक भूरक नापसँ खपटा खप दऽ बैसि गेलनि अछि तँ प्रसन्नताक दोसर लहरि मुख मण्डलकेँ उद्दीप्त कऽ देलकनि अछि।

आब ओ खपटा आ सुराही लऽ कऽ छड़ी टेकैत अज्ञात दिशामे चलि पड़लाह अछि। बजारमे दोबगली देखैत जाइत छथि आ आगाँ बढ़ल जाइत छथि। एक ठाम राज मिस्त्रीकेँ सिमेंटसँ काज करैत देखलथिन अछि। एक दीर्घ निःश्वास लऽ ओहि दिस बढ़लाह अछि। पहिने मालिकक पुछारी कयलनि अछि एहि अपरिचित वृद्धकेँ देखि मकान मालिक बाहर अबैत छथि। मुंशीजी निवेदन करैत छथिन ओहि खपटाकेँ ओहि सुराहीक भूरमे दऽ कऽ सिमटीसँ जोड़बा देबाक आ ऊपरसँ सिमटीक पोचाड़ा दऽ देबाक। हिनक वार्द्धक्य आ करुणार्द्र वाणी ओकरा विवश करैत छैक। राज मिस्त्रीसँ एतबा काज करबा दैत छनि। प्रसन्न चित्त मुंशीजी साँझ होइत होइत डेरा घूरि कऽ अबैत छथि। भरि दिनुक भूखल रहलाक कारणेँ जल्दी-जल्दी चूल्हिक पूजामे लागि जाइत छथि।

कविजी कार्यालयसँ आबि सायंकृत्यसँ निवृत्त भऽ नवका सुराही लऽ मुन्शीजीक डेरा जाइत छथि आ सोर करैत छथिन। मिझायल आँचकेँ फुकैत-फुकैत धूआँसँ नोरायल आँखि लेने मुंशीजी भनसा घरसँ बहराइत छथि। कविजीक हाथमे सुराही देखि पूछैत छथिन—अहाँ ई की लऽ अनलहुँ अछि?

—अहींक सुराही जे फूटि गेल अछि तकरा बदलामे ई अहींक हेतु लेने अयलहुँ अछि।

मुंशीजी मुक्त हास्य हँसैत घर जाइत छथि आ फुटलाहा सुराही हाथमे लेने बहराइत छथि। देखू कवीजी! हमर सुराही पहिनेसँ बेसी मजगूत भऽ गेल अछि। हमरा दोसर सुराही नहि चाही। अहाँकेँ जँ हमरा पर एतेक कृपा अछि तँ हमरा थोड़ेक किरमिच रंग ऊपर कऽ दियऽ जे एहि सुराहीकेँ हम फेर पहिलुक रंगमे रङि ली। हम आइ भोजन छोड़ि भरि दिन हरान भऽ एकरा दुरुस्त कयल अछि।

कविजी कहैत छथिन जे येह सुराही राखि लियऽ ने। ओहि सुराहीमे कोन एहन विशेषता छैक जे एहि हेतु अहाँ भोजन छाजन सभ छोड़ि देलहुँ?

–कविजी! हम कोना मोनक वेदना प्रकट करू। ई सुराही हमरा जे नेना छथि तनिका माइक हाथक थिकनि। एहि सुराहीक जल ढारिकऽ जखन पिबैत छी तखन जे तृप्ति होइत अछि तकर अनुभव दोसर कोनो सुराहीसँ नहि भऽ सकैत अछि। एतबा कहैत मुन्शीजीक आँखिमे नोर छलछला अबैत छनि।

हमर कोन दोष

साँझ पहर गामक पछबरिया पोखरिमे हाथ मटियबैत छलहुँ तँ दीनू बाबू भेटि गेलाह। सौराठसभा सँ लोक सभ घुरले छल, तकरे वर्णन कऽ रहल छलाह कि मदूधू, जे कलकत्ता सँ घुरले छल, मौजा जुत्ता मचमचबैत घाट पर पहुँचल आ लोटा मे पानि भरि पछबरिया-उतरबरिया कोन दिस मोहार पर सँ नीचा झहरि गेल।

दीनू बाबू कँ गत वर्षक घटना मोन पड़ि अयलनि, ओ कहऽलगलाह जे ई वैह मदूधू थीक जे यार ककाक ओहि ठाम नार-पातक कुट्टी काटल करय आ माँड़क तौला नादि मे उझिलि सानी बनाकऽ माल जाल कँ खोअबैत छल। आइ बूझि पड़ैत अछि जे यार काकाक धोया-पूता एकरा सोझाँमे एकर बहिया सन लगथिन।

हम कहलियनि—ककर भाग्य कखन कोना बदलि जाइत छैक तकर ज्वलन्त प्रमाण ई मदूधू थीक।

दीनूबाबू गप्पक क्रमकेँ आगाँ बढ़ौलनि—एकर बियाह परुकाँसाल दछिनबारि गामक डकूबाक ओहिठाम भेलैक। बाप तँ रहथिन महथू पाठक पाँजिक आ बियाह रहनि शिलानाथमे से एहि छौड़ाकेँ पूजी ओतबे।

हम कहलियनि– दीनूबाबू युग ततेक आगाँ बढ़ि गेलैक अछि जे आब आकृति देखिकऽ मुसलमान आ पंजाबी मात्र केँ चीन्हि सकैत छिऐक, मुदा एखनो किछु लोढ़ानाथ समाजमे छथि जे शिलानाथ आ महादेवझा केँ ऊघि रहलाह अछि।

दीनूबाबू केँ हमर गप्प किछु अनोन बुझि पड़लनि आ वितृष्णाक एक रेखा हुनक आकृति पर स्पष्ट बुझना गेल, हम क्रमकेँ बदलबाक हेतु पहिलुक प्रसंगक प्रति उत्सुकता व्यक्त कयलियनि। ओ ओहि गप्प केँ पुनः आगू बढ़ौलनि।

परुकाँ जखन ई सौराठ पहुँचल तँ कोनो बड़का लोक सँ कम एकर टब्बर नहि रहैक। रेशमी कुर्त्ता, रेशमी तौनी, रेशमी पाग, बड़का शतरंजी, एक उलौँच, बैलगाड़ी पर चाउर-दालि, आलू-कुम्हड़ौरी, आम, अँचार, नेबो, टोकना, बटुक-सभ समान लादि कऽ लऽ गेल छल।

एकर डील-डौल देखि दछिनबारि गामबलाक मोन चप-चपयलैक आ हेलक एकरो माम लहका। घटकक संग जखन एकरा डेरापर पहुँचलैक तँ पुछलकैक-बाबू अपनेक नाम की थिक ?'

हमर नाम थिक मधुवन बिहारी शाण्डिल्य। अपनेकेँ हमर नाम सुनि कनेक छगुनता भेल होयत, मुदा झा, ठाकुर, मिश्र, चौधरी आदि संकीर्णता बोधक उपाधि केँ व्याधि बूझि, कलकत्तामे रहनिहार हमरा लोकनि येह निश्चय कयलहुँ अछि। हम ओहीठाम कम्पिटीटिव एकजामिनेशन मे उत्तीर्ण भऽ बहुत

खर्च करबाक मनसूबा लऽ कऽ ओ गाछी पहुँचल छल। मद्धूक माम सँ पुछलकनि—हिनक गोत्र की थिकनि ?'

जावत ओ उत्तर देथिन तावत मद्धू बाजि उठल—हमर गोत्र तँ नामक संगहि अछि—शाण्डिल्य। हमर पिता महथू पाठक आ मातृक हमर शिलानाथ......।'

बीचमे बात काटि मद्धूक माम कहलथिन—परिचय पात तँ भलमानुसक सम्पत्ति आ जयवारक शृंगार थिकैक। तखन आबक युगमे जे कहल जाय। सुखपुर बला पाँच हजार टाका दैत छलाह, समाङ सभ क्यो ओकिल, क्यो प्रोफेसर, क्यो डाक्टर सैह सभ छथिन, मुदा थिकाह निषिद्ध जयबार। कतबो विचार उठि जाउक, मुदा एकदमसँ लोक घो कऽ कोना चाटि लेत ?'

घटक बजलाह—आहि, ताहि तरसँ पुनि जे से एहिमे कहबाक प्रयोजन की ? ओना तँ थिकाह ईहो लोकनि जयबारे, मुदा हिनका घरक क्रिया मर्यादा दोसरे छनि। पुरखाक बसा-ओल कतेक कन्यादानी सभ छथिन। ई काज कोना होयतैक ?'

मद्धू मामाक बिनु प्रतीक्षा कयने बाजि उठल—हम सभ देहाती नहि छी जे मोल-मोलाइ कऽ गप्प स्थिर करब। कन्याक प्रति वा वरक प्रति टाका लेबाक घोर विरोधी छी। तखन कन्याक सेहो तँ अंश ओहि सम्पत्ति मे रहिते छैक। ताहि हेतु विवेकशील लोकके कहबाक प्रयोजने की ? से कोन तरहक उत्साह अपने सभक अछि, ताहि पर प्रकाश देल जाय।'

दीनूबाबू आगू कहऽलगलाह—जाबत ई गप्प-सप्प भेलैक ताबत तबकदार दस खिल्ली मय अगाची लवंग, जर्दा, चून, सुपारी मसालासँ भरल चमचम करैत पान-दान मे आनि राखि देलकैक। ओतेक काल जे गप्पमे रुचि लैत रहलहुँ तकरा दक्षिणामे दू गोट दक्षिणी हमरो पड़ि लागल। कन्यागत पान सुपारी लऽकऽ हमरा आँखि मारलक आ बिचारि कऽ अबैत छी से कहि चलि देलक।

ओकरा गेलाक बाद हम पुछलिऐक-ऐँ हौ मद्धू! ई स्टोमेक इन्चार्ज कोन पद होइत छैक? असलमे स्वराज्यक बाद सँ ततेक नव-नव हाकिम सभ देहातो मे खद-खद करऽ लगलैक अछि जे मोनमे भेल कलकत्ता सन पैघ शरहमे कोनो एहने पद भेल होइक।'

मद्धू बाजल—दीनू भाइ! एखन हमरा डेरा पर अहींटा बैसल छी। दछिनबारि गामबलाकेँ नीक जकाँ चिन्हिते छिऐक आ सभ जेना धा एकट्ठा कयने अछि सेहो सभ बुझिते अछि। ओकरा जँ असल बात कहितिऐक तँ केवल पाँजिक नाम पर गछितय? तखन व्यवस्थाक नामपर एको पाइ नहि लेबैक। केवल विवाह खर्च कहि जँ दुइयो हजार देत तँ कऽ लेबैक। एहिमे अहाँ जोर लगा दियौक तँ एक सय टाका अहाँकेँ देब। जँ एहिसँ बेसी बढ़ौलहुँ तँ पाँच रुपैये सैकड़ अहींक थिक।

हम कहलिऐक–ओ सभ अछि लण्ठक सरदार। पाछाँ हमरे पर सभ कुन्नह झाड़ऽ लागय तँ तों सभ रहबह कलकत्ता, हमर रक्षा एहि ठाम के करत ?'

'कुन्नह की झाड़त ? अहाँ फूसि बात एकोटा ने बाजू। हम जे कहलिऐक अछि तकरे दोहरा जाइ। जे हमरा वाक्यक अर्थ नहि लगलनि तँ ताहिमे ककर दोष ?' मद्धू बजैत गेल। आमदनीक सबंधमे फूसि कहबे ने केलिऐक अछि। जे काज करैत छी से स्पष्ट शब्दें कहलिऐक अछि। तखन की समाज नहि छैक ?'

हम ओहीठाम सँ उठि दछिनबारि गामबलाक डेरा दिस चललहुँ। किछुए दूर गेलहुँ कि ओहि दूनू कें अबैत देखलिऐक। हमरा देखैत देरी घटकराज बाँहि पकड़ि कात लऽ गेलाह आ कहऽ लगलाह–"अपनेसँ लाथ कोन, चारि हजार ई खर्च करताह से सर्वेकत्व व्यवस्था सँ लऽ वर विदाइ धरि। मुदा हुनका सभक संकेत पाँच हजार भेल अछि। आब जँ अहाँ पड़ि कऽ ई काज करा दियनि तँ हमरा एक सय गछलनि अछि ताहिमे पचास अहींक। हँऽ तीन हजार नगद सँ कम जतेक कराबी ताहिमे पाँच रुपैये सैकड़ अहाँक। तखन सुचि-आचार थीत-पातसे कोना की तकरा एकदम स्पष्ट कऽ दियौक।'

हम उत्तर देलियैक–'शुचि-आचार तँ भलमानुसक होइते छैक उत्तम, तखन थीत-पातमे तँ ओ सभ महादेवे होइत छथि, मुदा एहि तीन चारि वर्षसँ जे जमीन उखड़ैत छैक से यैह लैत छथि।'

दछिनबारि गामबला पुछलनि—ई कलकत्तामे कोन काज करैत छथि से अपने लोकनिकें बुझल अछि ? हम तारतम्यमे पड़लहुँ। ई सभ लण्ठाधिराज अछि, सय ओमहर सँ, पचास एमहरसँ आ ताहिपरसँ पाँच रुपैये सैकड़ तकर लोभ, तें गोल-मोल कहलिऐक—हमरा लोकनि कलकत्ता तँ गेल छी नहि, कहैत छथि स्टोमेक इन्चार्ज छी। देह-दशा, बाजब-भूकब अपनो देखबे कयलियनि अछि। जमीन जाल कीनि रहल छथि साले साल, तें कोनो काजपर होथु, सुखी सम्पन्न छथि, ताहिमे सन्देह नहि। ई कहल जाओ जे अपने ई काज कोन तरहें करS चाहैत छियैक। लोक ओहो एकदम खरा छथि। हमरा जनैत व्यवस्था नहि लेताह। तखन विवाह-दानक खर्च ! से अपनेकें देबS पड़त, मुदा से तीन हजार धरि बेसीसँ बेसी अपने दियनि तँ हम पड़ी।

घटकराज बाजि उठलाह—आहि, ताहि तरसँ पुनि जे से ओहि परसँ विदाइयो त चाही। एहिमे किछु कम करबियौक।'

चलू, अपना भरि हम चेष्टा करब, अपने अढ़ाय हजार सँ बेसी नहि होइ, हम सम्हारि लेब।' हम ई कहि झटकि अपना गामक डेरा दिस बढ़लहुँ। मद्धूकें सब बात बुझा देलिऐक।

जखन दछिनबारि गामबला पहुँचल तँ मद्धूक माम पहिने झाड़S लगलथिन। ताहिपर हम कहलियनि जे ई तँ अवश्य जे पाँचो हजार अहाँ पबैत छी, मुदा ईहो गप्प तँ व्यक्तिकें देखि-

कऽ होइत छैक। हिनका लोकनिक घरक क्रिया-मर्यादा दोसर छनि, ताहि सभ बात के ध्यान मे राखि जे बजबाक हो से बाजू।'

मद्‌धू चट बाजि उठल—हमरा लोकनि सौराठक मर्यादा केँ बसौली हाटक निकृष्टता मे नहि बदलऽ चाहैत छी। एक पाइ व्यवस्थाक नामपर क्यो लेताह तँ हम विवाह नहि करब। हमरा लोकनि शपथ लऽ चुकल छी। तखन हम भाइमे एक-सरे आ हमरा माइक मनोरथ साँठ-उसारक बेसी। तेँ एक ठाम खर्चक हेतु तीन हजार टाका दऽदेथि तँ कराउ गऽ सिद्धान्त।'

हम कहलिऐक—मधुवन बिहारी बाबू, भेल अहाँक तीनू हजार, मुदा जेँ हेतु ई अपने पहुँचल छथि तेँ हमरा लोकनिक दिस सँ पाँच सय हिनक बिदाइ। हम जाइत छी सिद्धान्त कराबऽ।' दछिनवारि गामबला अढ़ाइ हजार गनि देलकैक। सिद्धान्त भेल, बरियाती सजल वियाहदान भऽ गेलैक।

हम पुछलियनि—अहाँ केँ हाथ लागल की नहिं?

दीनूबाबू कहलनि—एक सय एमहर सँ आ पचास ओम हरसँ तुरन्त भेटिगेल, मुदा पाँच रुपैये सैकड़बला हिसाब दूनू दिसुक बाँकिये रहल। तथापि हम अपनाकेँ ओहि दिन हाइ-कोटक वालिष्टर बुझनहुँ। एक-डेढ़ घंटाक मेहनतिमे डेढ़ सय बहुत भेल। जिनगी मे पहिल आ अन्तिम एहन कमाइ छल।

हम पुछलियनि— बादमे गप्प खुजलैक की नहि?

दीनूबाबू कहलनि—'आहिबा,.... ....दछिनबारि गाम बलाकेँ जखन पता लगलैक जे पहिने ई कलकत्तामे भनसीयाक काज करैत छलाह आ बादमे अपन होटल खोलने छथि, तँ दोसर यात्रामे पुछलकैक—'ओझाजी, लाख ब्राह्मणक बीच अपने एतेक मिथ्या बजलहुँ? ताहिपर मद्धू उत्तर देलकैक—हम स्पष्ट शब्देँ कहने छलहुँ जे हम स्टोमेक इनचार्ज छी। यदि हमरा वाक्यक अर्थ अपनेकेँ नहि लागल तँ एहिमे हमर कोन दोष? मुदा शहरमे रहने लोक कतेक चरफर भऽ जाइत अछि?

हम कहलियनि--'तेँ ने लोक कहैत छैक जे नहि पढ़ी तँ सहरो घूमि ली। ...

—❀००❀—

गोबर छत्ता

हमरा पितामह कें एकटा छत्ता छलनि। एखन जे आठ कमानी वला लोक कें रौद पानि मे तनने देखैत छियैक से छाता थिकैक। छत्ता मे सोड़ह गोट कमानी होइत छलैक। हमरा बाबा कें छाता नहिं, छत्ता रहनि। जेना गोबर छत्ता होइत अछि, अनमन ओहिना उतार। ओहि मे सोड़ह गोट कमानी रहैक, एकटा कमानी तीन हाथक। सोड़हो मिलाकऽ सोड़ह तिया अठतालीस हाथक। तौल मे पक्की तीन सेर। इस्पात सन मजगूत स्टीलक कमानी आ ताहि कमानी सभ पर सोनाक पानि चढ़ाओल। चम-चम करैत। एखनो जँ ओहि सोनाक पानि कें बुधियारी सँ काछि लेल जाइक तँ दू भरि सँ उपरे सोन बाहर भऽ सकैत छैक। प्रत्येक कमानीक नोक पर जे छक सन गोलका भुटका होइत छैक से शुद्ध चानीक आ प्रत्येक भुटका मे लाल, हीरा, नीलम आ पोखराजक कुन्नी सभ जड़ल छैक। जखन लोहाक कमानी पर्यन्त पर सोना चढ़ाओल, तखन चानी पर कियेक ने रहतैक ?

रेलगाड़ी अपना चालिये ससरल जा रहल छल। स्वतन्त्रताक पूर्णतः उपभोग करैत जेना जा रहल हो। अपन राज, अपन मर्जी, अपन बिचार आ अपन धुनि। जेना कोनो अगुताइ

Scanned by CamScanner

नहिं। भेल तँ निर्मली सँ पुनि घुरिये अयबाक छैक। दू घंटा विलम्बे सँ पहुँचत तँ कोन दुनिञा उनटन भऽ जयतैक। हमहूँ मोन मारिये कऽ बैसल छलहुँ फल्लाँ बाबूक मुहेँ एहि अद्भुत छाता .... अहा हा! छाता नहिं, छत्ताक वर्णन सुनैत अद्भुत रसक आस्वादन भऽ रहल छल।

'ओहि छत्ता मे डंटी जे लागल छैक से शुद्ध चानीक। पालिस कयल। हाथ देला उत्तर बुझना जाइत छैक जे संग-मरमरपर हाथ फेरि रहल होइ। ओकर मकुआ बला मूठ जे छलैक से अनमन हंसक गर्दनि सन! मुँह पर ओहिना हंस सन मूड़ी, जकर लोल सोनाक, आँखि दूनू नीलम केर आ लोल पर नाकक स्थान पर दू टा हीरा जड़ल। माथ पर पैघ सन एकटा पुखराज। डंटी नमती मे साढे चारि हाथ। ताहि पर शुद्ध कश्मीरी कारी रेशमक दू बाँट कऽ बाँटल सूत सँ बूनल कपड़ा। ताहि कपड़ा पर कथीक पोत देल छैक से नहि जानि। जेना तेल लागल देह पर सँ पानि छहलैत छैक तहिना ओहि पर सँ छहलि जाइत छैक।

दू पाइ आर अर्थात $२ \times \frac{२२}{७} \times R$ एकटा फार्मूला छैक ताहि फार्मूलाक अनुसार एहि छत्ताक परिधि १८ '८ हाथ होइत छैक। तनला उत्तर नओ आदमी पानि सँ आ अठारह आदमी रौद सँ बाँचि सकैत अछि। एक तरहेँ छोट छीन सामियाना अथवा तम्बू सैह भऽ जाइत छैक। दुइये अवसर पर ई तानल जाइत छलैक। एक तँ जखन विजया दशमी दिन हमर बाबा

गढ़ तोड़ऽ जाथिन आ दोसर अवसर होइत छलैक जखन सिम-रिया घाट जाइत छलथिन।

कातिक आ बैशाखकेँ पुण्य मास कहल गेल छैक। प्रत्येक वर्ष एहि दूनू मास मे स्नान कयलाक बाद गंगाक तीरे मे बैसि कऽ सन्ध्या वन्दन, तर्पण, पूजा आदि करैत छलथिन। से विजया दशमी दिन दन्तरबा हाथी पर हौदा कसाइत छलैक आ हौदाक पाछूमे भड़कदार मुरेठा बन्हने, कमरबन्द चढ़ौने दू टा खबास दूनू कातसँ ठेहुनिआ मारि कऽ बैसल एहि छत्ता केँ पकड़ने रहैत छलनि। आ तहिना गंगा कात मे फुलतोड़ा तथा पूजाक उपरसहक्रिया दूनू ब्राह्मण पूजा लग एहि छत्ता केँ धयने बैसल रहैत छलथिन। एहि दू अवसर पर ई छत्ता तानल जाइत छल आ जखन तानल जाइत छल तँ एकर शोभा देखबाक हेतु चारू भाग लोकक करमान लागि जाइत छल।

एक बेर तेहने इमर्जेन्सी माने नितान्त आवश्यकता पड़ि गेल जाहि कारणेँ एहि ऐतिहासिक छत्ताक मूठ माने मकुआ बेचि लेबऽ पड़ल। इमर्जेन्सी ई जे हमरा बहुआसिन माने वाइफ केँ क्लाइमेट चेञ्ज अर्थात् हवा पानि बदलबाक प्रयोजन पड़ि गेलनि। हमर फेमिली डाक्टर रहथि एस० सी० सेन अर्थात् सुशील चन्द्र सेन ओल्ड एम० बी० बी० एस०। ओ हमरा वाइफ केँ क्लाइमेट चेञ्ज करबाक एडभाइस माने परामर्श देलथिन। हुनका असल मे प्रेगिनेन्स अर्थात् कल्या-णक योग्यता छलनि आ बिनु क्लाइमेट बदलने लाइफ डेंजर माने जानक खतरा छलनि।

कहबी छैक 'जान त जहान'। साधारणो जानक मोल लाख टाका होइत छैक आ ओ तँ हमरे वाइफ छलीह। तें हुनका जानक की दाम से अहाँ अपने अँटकर लगा सकैत छी। हमरा जनैत तँ नहि बेसी तँ कम सँ कम साधारण जान सँ दस गुना अवश्य बेसी। तें दस लाखक जान कें बचयबाक हेतु दस बीस हजार खर्च करब सस्ते पड़ल। एहन स्थिति मे तँ लोक घर घड़ारी बेचि लैत अछि, हम तँ केवल एहि छत्ताक मूठ बेचलहुँ। मुदा से ततबामे बिकायल जे छओ मासक बदला मे तीन वर्ष मंसूरीमे राजसी ठाठ माने एकदम हाइ स्टैन्डर्ड लाइफ लीड करैत रहलहुँ। ओ तीन वर्ष जीवनक अविस्मरणीय काल रहल आ जीवन भरि अविस्मरणीये रहत। बस! हाय रे मंसूरीक ओ लाइफ! एतबा कहैत ओ आँखि मुनि अतीतक स्मृति सागर मे डूबि गेलाह।

हम तँ कविवर मनबोधक लिखल पाँती 'चित्र लिखल जनु साँस न वाक' केर प्रत्यक्ष उदाहरण बनि गेलहुँ हुनक मुद्रा देखि। कथीलै मुँह सँ हँऽ हूँ किछु बहरायत! एक टक फल्लाँ बाबू दिस तकैत रहि गेलियनि।

आँखि फोलैत फल्लाँ बाबू कहलनि — ओहि पीरियड मे अहाँक पिता हमरा संगहि छलाह। ओहि समय मे असल मे पूछी तँ हमर राज काज हमर दाइजी माने मदर सैह देखैत छलीह। कतेक स्त्रीगणकें होइत छैक जे काशी प्रयाग, विन्ध्याचल आदि तीर्थक नाम पर दूर कऽ आओत, मुदा हमरा मदर

केर सिद्धान्त छलनि ··'मन चंगा तँ कठौती मे गंगा' आ मोनमे पाप पोसने रही तँ कोनो तीर्थ घूमि आउ, कोनो फल नहि। यदि हृदय पवित्र अछि तँ तीर्थराज प्रयाग येह काया थिक। तेँ हमर मदर ड्यौढ़ी छोड़ि जीवनमे कतहु नहि गेलीह। धर्मक हेतु जतेक दान पुण्य होयबाक चाही से समय समय पर एहीठाम करैत रहैत छलीह। जमीन्दारीक सभ कागत पत्रो हुनके बुझल छलनि। स्टेटक मैनेजर तँ हमर मामा जी अपनहिं छलाह।

से जखन डा० एस० सी० सेन ओल्ड एम० बी० बी०-एस० क्लाइमेट चेंज करबाक एडभाइस कयलनि तँ मदर आ मामाजीक विचार भेलनि जे मंसूरी जाइ। अपना घर मे तँ लोक कोनहुना निर्वाह कऽ लैत अछि, मुदा बाहर गेला उत्तर तँ खानदानी मर्यादा के ध्यान में राखहि पड़ैत छैक, तकर निर्वाह करब आवश्यके भऽ जाइत छैक। ओना अहूँ तँ बुझिते होयबैक जे जमीन्दारी चल गेलाक बाद केहन केहन हाथी अड़रा अड़रा खसैत गेलाह। की स्टैन्डर्ड मेन्टेन करैत छलाह आ आब कोना दिन काटि रहल छथि। तेहना स्थिति मे हमरा तँ मात्र अठारह हजार नगदी आ डेढ़ सय बीघा मात्र जिरात छल। एकर अति-रिक्त घोड़ा, हाथी, गाय, बड़द, महीस आदि माल-जाल तँ गृहस्थाश्रमक हेतु आवश्यक होइते छैक। नगदी तँ सरकार लैये चुकल छल, जिरातक उपजा सँ कतेक धरि चलि सकैत छल ? हाथी, घोड़ा बेचि लियऽ तँ समाज मे लगले नाँ हँसाइ

होइत । बहुआसिनक सेवा शुश्रूषाक हेतु कम सँ कम दू टा खवासनी, अपना हेतु एकटा खबास आ एकटा भनसीया तँ परम आवश्यक छल । तेँ नहिं किछु तँ दस हजार टाकाक पबन्ध नितान्त आवश्यक छल । मानि लियऽ जे जी जाँति कऽ हाथी घोड़ा बेचबो करितहुँ. मुदा हाथी घोड़ा साग भाँटा तँ नहिं थिकैक जे ढाकीमे माथ पर लऽ कतहु सँ बेचि आनू । आ दोसर बात ई जे हाथी घोड़ा किनबाक सामर्थ्यो तँ आब समाज मे रखनिहार लोक तकनहुँ नहिं भेटत ।

यैह सभ कारण छलैक जे एहि छत्ताक मूठ बेचि लेबऽ पड़ल । जमाहिरातक बात छलैक. तेँ ओहि बेरुक यात्रा मे अहूँक पिताकेँ संग कऽ लेने छलियनि । ओहन जौहरी आब समाज मे अछि कहाँ ? एहि सभ ठाम ओ वस्तु सभ किननिहार कतऽ भेटैत ? ओ तँ आरो दाम देया दितथि, मुदा अपने अगुता गेल छलहुँ । तेँ मात्र एकतालीस हजार मे ओ मूठ बिका गेल, मुदा डंटी, कमानी आ कपड़ा केँ एखनो हम सुरक्षित रखने छी ।

हम कतबो स्मरण कऽ अयलहुँ जे एहि महानुभाव केँ कतहु देखने छियनि ? मुदा स्मरण नहिं भेल । एतबा तँ बुझिये गेलियनि जे ई हमरा चिन्हबा मे भ्रम कऽ रहल छथि । एतेक आत्मीय भावसँ जे गप्प करैत हो तकरा ई कोना कहल जाय जे हम चिन्हलहुँ नहिं । ओ अपन उपाख्यान सुनौने चल जा रहल छलाह ।

'कहबी छैक —'टुटलो हथिसार तँ नओ घरक साङह' । आब तँ ओहन वस्तु ने कतहु भेटतैक ने क्यो बनवाइये सकैत

अछि। एतेक पुरान होइतो एखनो जँ ओकर कपड़ा देखबैक तँ बूझि पड़त जेना कोनो सुकेशी नायिकाक उन्मुक्त कुंचित कचराशि हो। एखनहुँ तेहन ब्यूटीफुल माने सुन्दर लगैत छैक जे हटौनहु आँखि ओहि दिस सँ हटिते ने छैक। यद्यपि राखल राखल झिंगुर ओहि कपड़ा कें चाटि गेलैक अछि। आब बुझना जाइत अछि जे बेसी दिन राखल राखल ई वस्तु नष्ट भ्रष्ट नहिं भऽ जाय। अपने आब ओहि छत्ताक उपभोग करब से अन सोहाँत लागत, तें इच्छा होइत अछि जे बेचि ली। सोड़हो कमानीक नोक पर जे जमाहिरातक कुन्नी सभ छैक से नहियो किछु तँ अढाय तीन हजार सँ उपरेक होयतैक। मूठ नहिं छैक तैयो डंटी मे दू अढाय सेर सँ कम चानी नहिं बहरयतैक। आब तँ अहाँक पिता बृद्ध भऽ गेलाह तें एमहर नहिं अबैत छथि। अहूँ तँ हुनकर गुण किछु ने किछु सिखनहि होयब। तें अहाँक लग चर्चा कऽ देल अछि। यदि क्यो तेहन सौखीन लोक भेटि जाय तँ एहि पर भिड़ा देबैक। अहूँ कें उचित कमीशन भेटिये जायत। पलखति हो तँ डयौढी पर दसो मिनटक हेतु अवश्य आबी।

ओहि अद्‌भुत छत्ताक वर्णन सुनि मोन मे देखबाक लोभ भऽ गेल छल। हुनक गप्पक छवि छटा देखि ट्रेन मे समय कटबाक हेतु एक मित्रक सद्यः प्रकाशित उपन्यास संग लऽ लेने छलहुँ से पढ़बाक सोहे ने रहल। हमरा रेलगाड़ी मे पढब खूब उसरैत अछि। मनुक्खक ओहि अथरबोन मे पूर्णतः एकान्तताक

अनुभव होइत अछि, किन्तु फल्लाँ बाबूक गप्पो कोनो उपन्यास सँ कम रोचक नहिं लागि रहल छल। धनिकक बूड़ि वैद्यनाथ अवत र जे कहबी गढ़ल गेल होयतैक से एहने एहने लोक केँ देखि कऽ। हुनका गप्प सँ ई बुझबा मे कनेको भाङठ नहिं रहल जे फल्लाँ बाबू खानदानी रईस छथि। गप्प पर जँ चप्प दऽ दियैक तँ अखरकट्टू डाइन जकाँ एहि अखरकट्टू रईसक रूप आरो निखरत। तेँ हम गप्प मे भीक देलियनि— एहन सम्पत्ति तँ एक तरहें बाप पुरखाक स्मारक होइत छैक ...।

फल्लाँ बाबू बीचे मे लप्प दऽ लोकैत कहलनि —से तँ अवश्य। हमरा बूझब जे हैण्ड टू माउथ माने भरि पेट भोजनक कोनो समस्या से तँ नहिं अछि। कोनहुना एखन धरि साबिकक प्रतिष्ठा केँ बचबिते आबि रहल छी। एखनो पाँचटा नौकर डयौढ़ी पर रहिते अछि। मौनिंग वाक माने भिनसरुका टहल-नाइ, स्नान सँ पूर्व किछु फ्रूट्स, स्नान ध्यान कऽ जलपानमे सोहारी तरकारी मधुर भेले ताकय। दस गोटे विचारो पुछबाक हेतु प्रातः काल बँगलो पर अबिते रहैत अछि। तेँ दुइयो घंटा कचहरी लगाकऽ बैसऽ पड़िते अछि। कतबो घटि गेल छी तथापि अपने जिरातमे जाकऽ बैसब से तँ नहिं भऽ सकैत अछि। लोक देखत तँ येह कहत जे फल्लाँ बाबू बिलटि गेलाह। दोसर अपन अपन अभ्यास होइत छैक। जाहि देह मे पाव भरि गुल-रोगनक तेल पचाओल जाइत छल से देह साओन भादबक रौद कोना सहत ?

तावत गाड़ी स्टेशन पर आबि गेल। फल्लाँ बाबू धड़फड़ा कऽ उतरैत हमरा सँ डयौढ़ो पर अयबाक पुनः आग्रह कयलनि। हमरा ने हुनक नाम बुझल ने गाम। पुछला उत्तर तँ सभ बात गड़बड़ा जाइत। हम अथ उत मे पड़ल रहि गेलहुँ आ गाड़ी ससरऽ लागल।

हमरो ओहि सँ अगिले स्टेशन पर उतरबाक छल। ओहि ठाम सँ दू माइल पश्चिम जयबाक छल एक मित्र सँ भेट करबाक हेतु। अगिला स्टेशन सँ उतरि हम गन्तव्य स्थान पर पहुँचलहुँ तँ अवश्य, किन्तु जनिकासँ भेटक उद्देश्य छल से गाम सँ बाहर छलाह। दोसर क्यो परिचित लोक छल नहि। तेँ उनटे पैरेँ घूरि गेलहुँ। मुदा ओतऽ पता लागल जे रतुका गाड़ी एहि हाल्ट पर नहि ठाढ़ होइत छैक। हमरा अगिला अथवा पछिला स्टेशन जाय पड़त। अगिला स्टेशन चारि माइल आ पछिला स्टेशन साढ़े चारि माइल। हम पछिले स्टेशनक बाट धयलहुँ। साढ़े पाँचक अमल भऽ रहल छलैक।

हम हड़बड़ मे दड़बड़ दैत बढल जाइत छलहुँ। दू माइल करीब आयल होयब कि एक कोन सँ मेघ उठलैक आ तड़तड़ा कऽ वर्षा आरम्भ भऽ गेलैक। सूर्यास्तप्राय समय भऽ गेल रहैक। कारी कारी घटा सँ आच्छन्न आकाश आ ताहि पर सँ बुन्द छोड़ि बरिसैत मेघ। हम छाती तानिकऽ चलनिहार लोक छाता संग कऽ कियेक लेब। जतहि छाता लऽ जाइ ततहि छोड़ि देबाक अभ्यासी लोक। यदि कदाच कतहु कोनो प्रयोजन पड़िये गेल

तँ कोनो इष्ट मित्र सँ माङि कऽ काज चला लेलहुँ। बिसरियो गेलहुँ तँ कोनो सन्ताप नहिं। खा न खा हमरा सँ दाम असूलि लेताह तेहन अनुदार व्यक्ति हमरा मित्र मण्डलमे नहि छथि।

अगत्या रस्ताक कात मे एक शिष्ट व्यक्तिक दलान सन बुझना गेल। हम तितबाक भय सँ फानि कऽ ओहि दलान पर चढ़ि गेलहुँ। ओहि ठाम एकटा लटपटहा कुर्सी राखल छलैक आ एकटा चौकी। ताहि पर एकटा पटिया देल। मुखान्ध भऽ गेल छलैक। एक व्यक्ति खराम पर ठाढ़। हमरा ओहि झलफल मे देखना गेल जे हमरा ओसारा पर चढ़िते ओ व्यक्ति लुढ़ुदऽ कुर्सी पर बैसि गेल आ दू मिनटक अन्तराल पर दस मिनट मे पाँच गोट व्यक्तिवाचक संज्ञाक सम्बोधन मे प्रयोग करैत रहल— रौ रसफलबा ..., रौ फगुनिञा ......, रौ रोगहा ..., रौ फौद-रबा ...., रौ सोनमा .... —। अन्तिम सम्बोधनक ध्वनि जखन प्रतिध्वनित भऽ शान्त भऽ गेलैक तँ हमरा दिस संकेत करैत ओ व्यक्ति बजलाह हे औ बटोही! एहि तखतपोश पर बैसि जाउ!

स्वर हमरा परिचित सन बुझना गेल आ असलमे पूछी तँ तखतपोश शब्दसँ हमरा परिचय नहि छल, तेँ शब्दक अर्थ-बोध नहि होयबाक कारणेँ आधा मोन अर्थक अनुसन्धानमे आ आधा मोन परिचित स्वरकेँ स्मरण करबामे बँटि गेल। एहि द्वैध मनःस्थितिमे हम ततमताइते रहलहुँ ताबत दोसर आदेश वाक्य सुनि पड़ल—पटिया बिछाओल छैक से समटि

दियौक आ थिर भऽ बैसि जाउ। एखन ई पानि छुटबाक कोनो लक्षण नहि देखना जाइत अछि। ई खबसा सभ पानिक लाथेँ कोनो कोनमे काल कटैत होयत। बैमान भऽ गेल लोक।

तावत जाहि ठाम हम ठाढ़ छलहु ताहिठाम टप् टप् टप् चूबऽ लगलैक। हम चौकी दिस सहटलहुँ तावत ओहि कुर्सी पुरुषक कुर्सी सेहो डोलि उठलनि, ओहूठाम चार सँ टप् टप् टप्, कुर्सी घुसकबैत ओ स्वगत बाजि उठलाह—बैंगलो लीक करैत अछि। एकरा रिपेयर करायब एकदम इमर्जेंएट भऽ गेल अछि। कुर्सी घुसका कऽ जहाँ बैसऽ लगलाह कि पौआ लेउँच पर पड़लाक कारणेँ कड़कड़ा उठलनि। खसैत-खसैत बंचलाह आ बँचैत बँचैत पुनः स्वगत भाषण कऽ उठलाह—चेयरमे सेहो ब्रेकेज भऽ गेल अछि, एकरो रिपेयर करायब अनएभ्वायडेबुल भऽ गेल अछि।

आमहर सँ झटक आबऽ लगलैक। तेँ हम चौकीकेँ कनेक भीतर घीच लेबऽ चाहलहुँ। जेना पचीसीमे गोधियाँ बैसैत अछि तहिना ओहि चौकीमे दू टा पौआ आ दू टा पजेबाक जोड़ल अड़कन छलैक। घिचैत देरी पजेबा ढनमना गेलैक। तावते मे एक टा बुढ़िया खबासनी सिरकी हटाकऽ एकटा प्रकाश राखि गेल। ओ प्रकाश की तँ रेलबे गुमती परसँ आनल पुरान लालटेम। एकटा जरैत डिबिया ओहि खोलमे बन्द। हम ढनमनायल पजेबाकेँ सरियाबऽ लगलहु तावत ओ कुर्सी पुरुष अन्तर्द्धान भऽ गेलाह। बाहर मेघ झमकि रहल छलैक। आषाढ़ मास

आर्द्रा नक्षत्र, ज्योतिषी जीक छी पुंयोग। तखन भरि राति छोड़त कोना ? ओहि गुमती परक लालटेमक इजोतमे एकसरे बैसल बैसल राति दस बाजि गेल। बुनछेक होयबाक कोनो बाटे नहि।

तावत देखै छी जे वैह बुढ़िया खबासनी एकटा चङ्गेरीमे सेर आधेक चूड़ा, ताहि पर गोटेक कनसा गूड़, कतबहिमे एकटा पातक टुकरी पर थोड़ेक नोन-मेरिचाइ आ एकटा फाँड़ा अँचार, एकटा मटकूड़ी मे पाव डेढ़ेक दही आनि कऽ रखलक। पुनि एकटा पोआरक बीड़ी, एक डोलमे पानि आ लोटा तथा एक खंड केराक पात आनि कऽ धऽ देलक आ चल गेलि।

हमरा मोनमे क्रमहिं ई विश्वास घर करऽ लागल जे अपना पितामहक अद्भुत छत्ताक वर्णन कयनिहार रेलगाड़ी मे भेंट भेल भूतपूर्व जमींदारे साहेबक घर प्रायः थिकनि।

समाजवादी समाजक निर्माण करबाक धुनिमे आर्थिक विषमताकें दूर करबाक नारा देनिहार समाजवादी राजनेता लोकनि कोना तर कें ऊपर आ ऊपर कें तर कऽ आर्थिक वैषम्य कें बढ़ा रहलाह अछि ताहि पर तर्क वितर्क करैत एकसरे विचारसागरमे डूबि गेल छलहुँ से चूड़ा दहीक आगमन सँ भक् दऽ बाहर आबि गेल हुं। चूड़ा दहीकें देखिकऽ हमरा मोन मे विचार उठऽ लागल जे एहि विपन्न परिवारक एतेक अन्न खा लेबाक हमरा कोन अधिकार अछि ? फेर ने जानि अन्तरक कोन भावना प्रेरित कयलक जे हम ओहिमे सँ थोड़ेक चूड़ा आ नोन मेरिचाइ कें छोड़ि शेष सभ सामग्री सानि कऽ

खा लेलहुँ। तखन फेर ओ बुढ़िया आबि एकटा सतरंजी आ गेड़आ ओहि चौकी पर राखि देलक आ डोल चङेरी आदि उठा कऽ लऽ जाइत कहलक—भोरमे सरकार कहलैथ गऽ भेंट कऽ कऽ जाइ लै।

रातिये एहि अनचिन्हार गाम सँ चलि देबाक तँ कोनो प्रश्ने नहि छल, तखन भोरमे अन्हरोखे उठि कऽ चलि दितहुँ ताहिमे अवरोध भऽ गेल। ओहि सतरंजीकेँ ओछा हम कल्याण करौट दऽ देलहुँ। मोस तँ बड़ कटैत छल, मुदा थाकल रहलाक कारणेँ बेसी काल कष्ट नहि दऽ सकल। निद्रा जे भेल से भेर भऽ सूति रहलहुँ। अइलभोरे निन्न टूटल। प्रातः कृत्य कइये ली से निर्णय कयल। ई रईस लोक छथि। कखन उठताह से के जनैत अछि। हम लोटा लऽ बाध दिस बिदा भेलहुँ तँ किछु दूर पर जामुनक गाछ छलैक। ओहि गाछ तर अध धोतिया ओढ़ने फुलडाली मे जामुन बीछि-बीछि रखैत। बाह्य भूमिसँ घुरला पर ओहिठाम एकटा चभच्चा छलैक जाहि मे हाथ मटियाबऽ लगलहुँ। ओहि चभच्चाक पछबरिया मोहार पर छोट सन एकटा फुलबाड़ी घेड़ल बेढ़ल। टाटक काते काते सात-आठ टा छोटे छोटे लतासक गाछ। ताहि गाछमे सँ छोटकी लग्गी लऽ कऽ ओहि व्यक्तिकेँ लताम तोड़ैत देखलियैक। हम दतमनि धरिक कृत्य समाप्त कऽ दलानपर अयलहुँ तँ कुर्सीकेँ एकटा खम्हेलीमे ओठङौने घरबैयाकेँ ओहि पर ओहिना अधधोतिया कयने बैसल देखलियनि।

आब मोनक आशंका मेटा गेल। ई फल्लें बाबू बैसल छलाह। हमरा देखैत देरी हुलसिकऽ बजलाह–राति अहीं छलहुँ ? तखन तँ अहाँकें व्यर्थें चुड़ेठलहुँ। अहाँक पिता तँ दस दस दिन ड्यौढ़ी पर रहैत छलाह आ भनने घरमे खाइत छलाह। हमरा तँ भेल जे कोनो अभ्यागत छथि। कोनो कष्ट तँ ने भेल ? अहाँक पिताक तँ आब पैरुख घटि गेलनि अछि तें नहि अबैत छथि। अच्छा, किछु इमर्जेन्सी भऽ गेल अछि। तें जाहि छत्ताक प्रसंग गाड़ीमे गप्प भेल छल से छत्ता अहाँ कें देखाइये दैत छी। एतबा कहैत ओ भीतर गेलाह आ एकटा कपड़ामे भिंड़िआयल ओहि ऐतिहासिक छत्ताकें बाहर करैत कहलनि—यदि शीघ्र कोनो ग्राहक भेटि जाइत तँ नीक छल।

छत्ता पैघ अवश्य छलैक, कपड़ो रेशमी, सहस्राक्षक सहो-दर। कमानीक नोक पर लाल उज्जर शीशा जड़ल। डण्टीपर चानीक पत्तर जे अढ़ाय तीन भरि होइतैक। पन्द्रह टाका परमा-वधि ओकर दाम।

हमरा अन्तरक कोनो अज्ञात भाव हृदयकें द्रवित कऽ देलक। चार दिस देखलियैक तँ बुझना गेल जे तीन वर्षसँ चार पर खढ़ नहिं पड़ि सकलैक अछि। तावत बुढिया खबासनी एक टा छिपलीमे थोड़ेक जामुन आ थोड़ेक लताम काटल सोझाँमे राखि देलक। घरबैया आग्रह कयलनि– किछु स्वदेशी शुद्ध फ्रूट्स खा लियऽ। बासि मुँह कोना घर छोड़ब।

हम ओहि छिपली कें खाली कयलहुँ आ जेबीमे पाँच टा

दस टकही छल से सोफाँमे रखैत कहलियनि एहि छत्ताक अगाउ लेल जाय। हम शीघ्रे ग्राहक ताकि देब।

ओ टाका बिनु छुइनहि कहलनि—ई छत्ता अहाँ लेने जाउ अपना पिताकेँ दऽ देबनि आ हमर नाम कहि देबनि।

हमरा ओहि व्यक्तिक विपन्नता, कौलिक बड़प्पनक प्रति मोह, एहन विभवहीन होइतो अतिथिक सत्कार करबाक मनोरथ देखि दया आबि गेल। हम कल्पना करय लगलहुँ एहि व्यक्तिक बाल्य काल कतेक दुलारमलारमे बीतल होयतैक, यौवन कतेक उल्लास ओ उमंगमय रहल होयतैक, किन्तु आइ एहि वार्द्ध-क्यमे, जीवन भार वहन करबामे अक्षम अवस्थामे एना दुर्गंत जीवन केहन दुरूह प्रतीत होइत होयतैक। मानि लेलहुँ—पूर्वज शोषणे द्वारा धनसंचय कयने होथुन, किन्तु ककरो पापक दण्ड ककरो देब कहाँक न्याय थिक?

हमरा स्पष्ट होअऽ पड़ल। कहलियनि—अपने हमरा चिन्हबामे भ्रम कऽ रहल छी। हमरा पिताकेँ स्वर्गीय भेना पचीसो वर्ष सँ ऊपर भेलनि। हमरा अपनेक नामो ज्ञात नहिं अछि, अपने ई बंगला कें छरयबाक हेतु राखि लेल जाय। कहैत हम चलि देलहुँ। ओ सोर करैत कहलनि- हे! ककरो कहबैक नहिं जे बाबू साहेब छत्ता बेचऽ चाहि रहल छथि।

—:०००० :—

आत्महत्याक पूर्व

चि० श्री .... केँ शुभाशिष ।

आइ एक विशेष प्रयोजन सँ ई पत्र लिखि रहल छी । हम जे किछु निर्णय कयलहुँ अछि, हिन्दू धर्मशास्त्र एकर सर्वथा विरुद्ध अछि । एहि कृत्यकेँ सभसँ पैघ पाप मानने अछि । ई बात हम नीक जकाँ जनैत छी । गत पाँच माससँ एहि प्रसंग बिचार-मन्थन करैत अयलहुँ । यदि से नहिं रहैत, हम धर्म शास्त्रक एहि तथ्यसँ अनभिज्ञ रहितहुँ अथवा हिन्दू धर्मग्रन्थ पर अविश्वास रहैत, अपन पूर्वज द्वारा प्रतिपादित विचारक प्रति अनास्था रहैत तँ ई पत्र आइसँ पाँच मास पूर्व अहाँ केँ हस्तगत भेल रहैत । किन्तु रक्तमे हिन्दूक संस्कार प्रवाहित होइत रहल अछि आ सैह एतेक दिन धरि चिन्तन करबाक हेतु बाध्य कयने रहल आ एहि पत्रमे एतेक बिलम्ब भेल । एतेक फड़िछाकऽ लिखबाक तात्पर्य ई जे अहाँ ई नहिं सोचिली जे हम कोनो मानसिक आवेगमे आबि बिनु किछु सोचने-बिचारने किछु निर्णय कऽ लेलहुँ अछि । तखन एतबा अवश्य जे एक बेर निर्णय कऽ लेलहुँ ताहिमे कोनो परिवर्त्तन नहि होअऽ जा रहल अछि । जावत ई पत्र अहाँकेँ हस्तगत होयत गऽ तावत हम अपन लक्ष्यकेँ बिद्ध कऽ चुकल रहब । तैँ एहि पत्रमे कयल संकेतक अनुसारे भविष्यमे कार्य कर्त्तव्य ।

अहाँक मनमे उत्सुकोता अवश्य होयत जे कोन एहन समस्या उत्पन्न भेलैक जकर समाधान आन तरहेँ सम्भव नहिं छलैक। कठिन सँ कठिन परिस्थिति सँ संघर्ष कऽ मनुक्ख अपनाकेँ विपत्ति सँ मुक्त कऽ लैत अछि। तेहना स्थितिमे हमरा सन संघर्षशील प्राणी अपन पराजय स्वीकार कऽ लेलक आ प्रतिक्रिया-स्वरूप आत्महत्याक आश्रय धयलक ई घटना अहींक हेतु नहि, हमरा परिचयक जे परिधि अछि ताहि अन्तर्गत अयनिहार समाजोक लोकक हेतु विस्मयकारी होयतैक, किन्तु घटना घटित भऽ चुकल, एहि पत्रकेँ पढ़ैतकाल सैह बूझल जयबाक चाही।

लोक धूआँसँ आगिक अनुमान करैत अछि, किन्तु हमरा जीवनक यैह विशेषता रहल जे हम धूआँ पर्यन्तकेँ बाहर नहि होअऽ देलिऐक। तेँ हमरा अन्तरमे धधकैत आगिक पता ककरो छलैके नहिं।

गप्प कयला उत्तर, ऊपरसँ देखला उत्तर, दैनन्दिन कार्य प्रणाली ओ उत्तरदायित्वक निर्वाह आदिकेँ देखिकऽ क्यो अँटकरो नहि लगा सकैत छल जे हमरा जीवनक बीच एक एहन वैषम्य अछि जाहि ज्वालामे भितरे भीतर हमर मन प्राण जरि रहल अछि, पजरि रहल अछि। किन्तु जाहि विषमताक संग हमरा संघर्ष होइत आबि रहल छल तकरा परास्त करब साधारण जन साध्य नहि छल। हमर अनुमान अछि जे आन एहि स्थिति मे बरखो दू बरख नहि खेपि सकैत। हम तँ तेसर युगकेँ अर्थात् बारह तीया छत्तीस वर्षक अओन-पओन बितौलहुँ।

अहाँ कहि सकैत छी बिलम्बो सँ सही, मुदा धैर्य तँ अहूँ किछु बिलमिकऽ त्यागे कयलहुँ।

अहाँ ईहो कहि सकैत छी जे आत्महत्या तँ पलायनवाद थिक। ई कायरक काज थिकैक। हम कायरो भऽ सकैत छी, से शंका अहाँक मोनमे कहियो ने भेल होयत।

ई बूझि राखू जे आत्महत्यामे जाहि साहस ओ वीरताक प्रयोजन छैक से दोसराक हत्या करबामे नहि, किन्तु हम अपन वीरता प्रदर्शित करबाक हेतु आत्महत्या करऽ नहि जा रहल छी। एकरा पलायनवाद हमहूँ स्वीकार करैत छी, किन्तु एहन निर्णय करबासँ पूर्व धरि अन्तर्द्वन्द्व हमर कोन दुर्दशा कयलक अछि तकर वर्णन शब्दक सीमासँ बाहर अछि। यदि हम अपन परिस्थिति सँ अवगत करा देब तँ हमरा विश्वास अछि जे हमर कयल निर्णय सँ अहूँ सहमत भऽ जायब। यैह कारण अछि जे जकरा आइधरि हम रहस्य बनौने रहलहुँ तकर उद्घाटन अहाँक लग कऽ रहल छी। ई अहाँकेँ नीक जकाँ बूझल अछि जे हम समाजमे चिन्हार लोक छी। हमर ई रहस्य ने जानि कोन रूप धारण कऽ लेअय आ भविष्यमे हमर व्यक्तित्व विवादास्पद बनि जाय, तेँ एहि रहस्यक उद्घाटन व्यक्तिगत रूपेँ अहाँक लग कऽ रहल छी। एकरा सार्वजनिक उदघोष नहि बूझि लेब। अहाँ एकर गोपनीयता केँ सुरक्षित राखब।

अहाँकेँ भऽ सकैत अछि जे मृत्युक उपरान्त ई रहस्य बनल रहय अथवा एकरा प्रचारमे डंका बाजि जाइक, ताहिसँ मुइनहार

Scanned by CamScanner

केँ प्रयोजन की। अथवा अहाँ ईहो सोचि सकैत छी जे, जे आइ धरि गोपनोय बनल रहल तकर उद्घाटन मरबाक समय मे करबाक की प्रयोजन। किन्तु अहाँके ईहो सोचक चाही जे एकरा पाछाँ अवश्य कोनो तेहन कारण होयतैक जे हमरा एकर उद्घाटन करबाक हेतु बाध्य कयने होयत।

एहि संग अहाँ ईहो बूझि लियऽ जे जाहि रहस्यकेँ हम जीवन भरि अनुद्घाटित रखलहुँ तकरा अहींक लग उद्घाटित करबाक पाछाँ सेहो कोनो पैघ कारण होयतैक। से जानि लेला उत्तर अहाँकेँ हमरा प्रति की कर्त्तव्य होयत से अहाँ जानि सकब।

हमर विश्वास अछि जे एकर गोपनीयता एक मात्र अहीं अक्षुण्ण राखि सकब। यैह विश्वास अहाँक लग एहि रहस्यक उद्घाटन करबाक प्रेरणा देलक। हम जे उत्तरदायत्व अहाँ पर थोपने जाइत छी तकर निर्वाह अहाँ करब अथवा नहि से तँ अहाँक विवेकपर निर्भर अछि, किन्तु अहाँ निर्वाह नहि करब से आशंका हमरा तिल मात्रो नहि भेल आ तेँ खुइँचा छोड़ा कऽ सभ बात अहाँक समक्ष राखि रहल छी। शास्त्र कहैत छैक, विश्वासः फलदायकः आ हम अहाँक प्रति एहन दृढ़ विश्वास रखैत छी तँ निश्चित रूपमे अहाँक भीतर जे एकटा मनुक्ख अछि तकर विवेक जगबे करतैक आ ओ अहाँ सँ अपन उत्तर-दायित्वक निर्वाह करयबे करत, हमर विश्वासो फलीभूत होयत।

आब अहाँ घबड़ा उठल होयब जे कोन उत्तरदायित्वक निर्वाह अहाँके करऽ पड़त, कोन भार कपार पर लादल जायत, किन्तु एतबाधरि बूझि लियऽ जे कोना आर्थिक भार अहाँ पर

नहि देबऽ जा रहल छी। अर्थक सम्बन्धमे योऽर्थेशुचिः स हि शुचिः न मृद्वारि शुचिः शुचिः अर्थात् अर्थक प्रसंग जे व्यवहारमे पवित्र अछि सैह पवित्र अछि, माटि वा पानिसँ पवित्रता कोनो पवित्रता नहि, यैह हमर आदर्श रहल अछि। तेँ जकर जे किछु बाँकी बकियौता छलैक से पाइ पाइ कऽ हम सभक दऽ देने छिऐक। अहाँकेँ हमर कयल ऋण परिशोध नहिं करऽ पड़त।

हम अपना परिवारक भरण-पोषणक भार सेहो अहाँ पर नहिं लादऽ जा रहल छी। यद्यपि हमर अंधविश्वास रहल जे जन्म माय-बाप दैत छैक, भोग तँ अपना कर्मक लोककेँ करऽ पड़ैत छैक आ जे विधाता मुँह चिरने रहैत छथिन्ह से तकर चिन्तो रखैत छथिन। तथापि ततबा सम्पत्ति छोड़ने जा रहल छी, जकरा पूंजी बना लेल जाय तँ हमरा सन छोटछीन परिवारक गुजर मे कोनो बाधा नहि होयतैक। प्रयोजन एतबे छैक जे ओरिया-पोरियाकऽ ओकर उपयोग होइक तँ एहि परिवारक पालनमे विघटन नहि होयतैक, एकटा परिवार नीक जकाँ पालित भऽ सकैत छैक, किन्तु जँ पूजी मे हाथ लगा देल जयतैक तखन ने जानि भविष्य की होयतैक।

अहाँकेँ हम अपन अप्रकाशित कृति सभकेँ प्रकाशित करबाक भार सेहो नहि देबऽ जा रहलहुँ अछि। यदि समाज केँ हमरा कृति मे प्रतिपादित विचार उपादेय बुझना जयतैक तँ स्वतः अप्रकाशितो कृतिक जिज्ञासा होयबे करतैक आ तखन

'उत्पत्स्यते च मम कोऽपि समान धर्मा' जकरा द्वारा ओहो सभ प्रकाशमे आबिये जायत।

आब हम ओहि कारणसँ अहाँकेँ अवगत करयबासँ पूर्व जे उत्तरदायित्व अहाँ पर थोपऽ जा रहल छी ताहिसँ अवगत करा दैत छी। अहाँकेँ मात्र दू गोट कार्य हमर सम्पादित करऽ पड़त। प्रथम तँ ई जे हमर मृत्यू स्वाभाविक रूपेँ हृदयक गति अवरुद्ध भऽ गेलाक कारण भऽ गेल से समाचार पत्र द्वारा घोषित कऽ देबऽ पड़त। हम दस हजारक जीवन-बीमा करा चुकल छी। यदि आत्महत्याक रहस्य खूजि गेल तँ ओ राशि हमरा परिवार केँ उपलब्ध नहि भऽ सकतैक।

दोसर भार ई देबऽ जा रहल छी जे ओ राशि उपलब्ध कऽ एहि अबोध नेना केँ उच्च शिक्षा धरि पहुँचयबाक उत्तरदायित्व अहाँकेँ उठबऽ पड़त। जीवन-बीमा मे एहि कार्यक हेतु एहि राशिक व्यय करबाक शर्त लिखल छैक। तेँ आन तरहेँ एकर व्यय करबाक हेतु अहाँके क्यो बाध्य नहि कऽ सकैत अछि। ओना, पारिवारिक स्थिति एहि कार्यमे अनेक बिघ्नबाधा उपस्थित करत, किन्तु अहाँ सन विश्वासी लोकपर ई भार सौंपब एही हेतु हमरा आवश्यक बुझना गेल।

एतेक कहलाक बादो अहाँकेँ उत्सुकता बनले होयत जे आत्महत्याक आश्रय ग्रहण करबाक हेतु हमरा बाध्य किएक होअऽ पड़ल। तँ सेहो सुनिये लियऽ।

अपना सभक धर्मशास्त्रमे पत्नीकेँ जीवनसंगिनी नहि, अर्द्धाङ्गिनी कहल गेलैक अछि—'जय अधपुरुष जयति अधनारी'

साठि]

आ जँ ककरो अद्धंग भऽ जाइक तँ घिसियौड़ कटैत जीवन बितयबासँ नीक मरणकेँ बूझत। हमरो स्थिति सैह भऽ गेल छल। हमरा पत्नीकेँ हमरा प्रति अखण्ड अविश्वास। एकरा दुर्योग कही अथवा दैवी विडम्बना, मुदा सत्य यैह थिक जे एहन प्रतिकूल रुचिक समन्वय असम्भव छल।

यदि हमरा कम नोन खयबाक अभ्यास तँ हुनका बेसी, हमरा जँ हरियर रंग पसिन्न तँ हुनका लाल। हमरा यदि मेरचाइ नापसिन्न तँ ओ बिनु मेरिचाइक किछु नहि रुन्हतीह। हम धिया-पूताकेँ मारबाक घोर विरोधी तँ हुनका हाथेँ बिनु दू चट खयने कहियो कोनो नेना नहि रहि सकैछ। हमरा यदि अतिथि-अभ्यागतक स्वागतक सत्कार करबामे रुचि तँ ओ ओहि दिन अट्ठाबजर खसा देथि। हमर इच्छा जे जहाँ धरि भऽ सकय, तन-मन-धनसँ अनकर उपकारे कऽ दियैक तँ ओ अपकारे करबाक यत्नमे लागलि। एतबे नहि, जँ कदाच पता लागि गेलनि जे आइ ककरो उपकार भऽ गेलैक अछि तँ सात दिन धरि हनहन पटपट।

एहन मनुक्खक संग यदि पैंतीस छत्तीस वर्ष जीवन-यापन कऽ गेलहुँ तँ ताहीसँ हमर सहनशीलताक अनुमान कयो कऽ सकैत अछि। एहि अवधिमे जतबा व्यंग्यबाणसँ हमर शरीर ओ आत्मा विद्ध भेल अछि, यदि भीष्म रहितहुँ तँ लोक हमरो शरशय्या पर पड़ल देखैत। भीष्मकेँ तँ शारीरिक वेदना मात्र होइत छल होयतनि, ओहि संग मानसिक शान्तिक अनु-

भव करैत छल होयताह जे धराशायी भऽ गेलाक बाद अन्यायीक पक्ष लऽ कऽ आब लड़ऽ तँ नहि पड़त, किन्तु हम तँ मानसिक यन्त्रणा सँ छटपटाइत रहलहुँ।

एहि प्रकारक प्रतिकूल स्वभावक लोकक संग जीवन-गाड़ी कें घिचबामे कौन कठिनता होइत छैक से पेट्रोलसँ चलनिहार सवारी पर यात्रा कयनिहार नहिं बूझि सकैत अछि। सभसँ अधिक शान्ति ओ विश्राम लोकके अपना घरमे आबिकऽ होइत छैक, किन्तु दिनभरि कोल्हु पेरलाक बाद थाकल-ठेहिआयल घर आबय आ ओतऽ व्यंग्यवाणक वर्षा आरम्भ भऽ जाइक तँ ओकर जीवन केहन नारकीय भऽ जयतैक से सहजहिं बूझल जा सकैछ, मुदा हम एकरा विधिक विधान बूझि अङेजि लेने छलहुँ आ तेँ एतेक दीर्घ अवधिकेँ पार कऽ गेलहुँ, कयो एहि विषमताक गन्ध मात्र नहि बूझि सकल।

किन्तु एमहर पाँच-छौ माससँ जे वैषम्य बढ़ल से अत्यन्त विस्मयकारी छल। ओ हमर सहन-शक्तिक अतिक्रमण कऽ देलक आ हमरा एहि निर्णयपर पहुँचय पड़ल।

अहाँकेँ देखल होयत आ सुनलो होयत। करुणा एक प्रतिभामयी नारी, नहि, किशोरी, जे यौवनक दुआरि पर एखन पैर रखबे कयलक अछि, हम ओकर दुइ गोट रचना अपना पत्रमे छपलिऐक। एक निबन्ध आ एक कविता। हमरा व्यक्तिगत परिचय नहि छल।

एक दिन ओ हमरा कार्यालयमे आयलि ई जिज्ञासा करैत जे आकाशवाणी मे लोकके ँ कार्यक्रम कोना भेटैत छैक। हम ओकरा डेरापर आबऽ कहलिऐक, ओकर स्वर-परीक्षा करबाक हेतु। ओ यथा समय अयबो कयलि। हम अपन पत्नी ओ अपना कन्या कँ सेहो बजा लेलिऐक। पहिने त ँ करुणा सकुचाइलि, मुदा जखन कविता पढ़ऽ लागलि त ँ नामक अनुरूपे ओकरा स्वर सँ करुणाक धारा प्रवाहित होअऽ लगलैक।

हम आकाशवाणीक अधिकारी कँ ओकरा कार्यक्रम देबाक अनुरोध कयलियनि आ ओ मानियो गेलाह। कार्यक्रम प्रसारितो भेलैक। हम अपना कोठली मे बैसल कार्यक्रम सुनैत रही। मोनमे आयल जे करुणा हमर बेटी रहैत त ँ एहि दिशामे एकर पूर्ण विकासक प्रबन्ध हम कऽ दितियैक। ओही कालमे हमर पत्नी सेहो हमरा कोठली मे अयलीह आ कहलनि जे ई त ँ ओही दिनक छुछनरियाक गीत बूझि पड़ैत अछि। हम हुनक एहि उक्तिक प्रतिवाद कयलियनि। दोसर दिन भरि टोलमे एकर चर्चा पसरि गेल जे हमरा करुणाक संग अनुचित सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल अछि।

अहाँकेँ नीक जकाँ ज्ञात अछि जे चरित्रे हमर बल, हमर सम्पत्ति ओ हमर ऐश्वर्य रहल अछि, किन्तु ताहि चरित्रकेँ दूषित करबाक प्रयास कयल गेल। अनका द्वारा नहि, हमर अपन अर्द्धाङ्गिनी द्वारा। आनक बात पर किछु काल अविश्वासो कयल जा सकैत छलैक, किन्तु यदि स्वयं पत्नी एहि प्रकारक

आरोप कऽ दैक त ँ जेना भरद्वाज मुनिकेँ सेहो रामवनगमनमे भरतक सहमतिक भ्रम भऽ गेल छलनि तहिना समाजक विवेकशीलो लोककेँ भ्रम भऽ जा सकैत छैक।

हम जकरा प्रति अपन सन्तानक भाव रखैत अयलहुँ तकरा प्रति हमर अनुचित सम्बन्धक अपवाद हमरा अन्तरकेँ आलोड़ित विलोड़ित कऽ देलक। मनुक्ख अन्तमे मनुक्खे थिक से नहि कहल जा सकैत अछि। ओ देवतो भऽ जाइत अछि आ पिशाचो। काम, क्रोध आदि मनोविकार पर विजय पाबि लेब साधारण बात नहि। एकर अर्थ ईहो नहि जे हम भावावेशमे विवेककेँ ताखपर राखि देनिहार लोक छलहुँ।

किन्तु एकटा क्षण अयलैक जे हमरा विवेककेँ भ्रष्ट कऽ देलक। सम्भावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते। तेँ हमरा एहि निष्कर्ष पर पहुँचऽ पड़ल।

कोनो तेहन अलौकिक प्रतिभासम्पन्न लोक हम छलहुँ नहि जे देशकेँ, समाजकेँ हमरा मुइने कोनो क्षति भऽ जयतैक। हानि होयतैक एक मात्र एहि अबोध नेनाक, जकरा भविष्यक प्रति हम बड़ आशान्वित छलहुँ। तेँ ई भार अहाँपर एक दृढ़ विश्वासक संग सौंपि हम विश्वनाथक शरणमे जा रहल छी। यदि अप्रिय कोनो हमरा सँ भऽ गेल हो त ँ तकरा बिसरि देब।

अहाँक शुभाकांक्षी—
अमलेन्द्र मुमुर्षु

—::o::—

जाड़ा फेनो अओतो !

समस्तीपुर सँ गाड़ी चलि पड़ल। अगिला स्टेशन अंगार घाट। दू मिनट गाड़ी अँटकल। ओहि दू मिनटक अवधिमे स्टेशनपर मुखरित होअऽ वला अनेक प्रकारक ध्वनि कानसँ टकराइत रहल—पान-बीड़ी सिकरेट, रामदाना " रा "'म " दाना, काबुली चना हय, अपनो खाउ, बौओ लै लेने जाउ, एकअने बोरा दू अने जोड़ा " एहि ध्वनि तरंगक बीच एक टा एहनो ध्वनि कानमे पड़ल जे अपना दिस चुम्बक जकाँ घीचि लेलक—'बाबू जाड़ा फेनो अओतो।'

एक आन्हर दहिना हाथेँ लाठी आ वामा हाथेँ गाड़ीक डिब्बाकेँ स्पर्श करैत आगाँ बढ़ल चल अबैत छल। ओकरा मुँहसँ आन-आन आन्हर जकाँ—अन्हराकेँ एगो पाइ दू बाबू, सित्ताराम .. सित्ताराम, अन्हरा नचारकेँ एक पाइ भेटओ मालिक ! आदि ध्वनि नहि भऽ रहल छलैक। ओ अनवरत एक मात्र शब्द बजैत आगाँ ससरल जा रहल छल—बाबू ! जाड़ा फेनो अओतो। हम जाहि डिब्बामे छलहुँ ताहि ठाम धरि जावत ओ आन्हर आयल तावत गार्ड साहेबक ह्वीसिल बाजि चुकल छलनि, गाड़ी ससरऽ लागल। हमरा मोनक जिज्ञासा मोने रहि गेल। केवल आकृति देखबामे आयल। नाक

कपार आदि देखला उत्तर बुझना गेल जेना ई स्वरूप पहिने देखल हो आ से अत्यन्त निकटसँ आ अनेक बेर। कतबो स्मरण करैत गेलहुँ, माथपर कतेक बल देल, स्मृतिकेँ कतबो जगाओल, किन्तु मोन नहि पड़ल। भेल जे भऽ सकैत अछि भीखे मङैत कतहु देखने होइऐक, परन्तु भीख मङैत जँ देखने रहितिऐक तँ ओकरा मुँह सँ उच्चरित होअऽवला शब्द जे आइ एना आकृष्ट कयलक से नहि करैत। एतबा सोचैत सोचैत फेर मोनमे ओ शब्द विचार-तन्तुमे ओझराय लागल।

'बाबू! जाड़ा फेनो अओतो' कोन विशिष्ट अर्थकेँ ई शब्द अपनामे अन्तर्निहित रखने अछि? संसारमे बहुत भिखारिकेँ देखल अछि। आन्हर भिखारि तँ बेसी एहने देखबामे आयल जे अपन विलक्षण स्वरमे संसारक निस्सारताकेँ सिद्ध करऽबला पद, भगवद्भक्तिसँ ओत प्रोत सूर तुलसी मीरा कबीरक पद सभकेँ गाबि-गाबि भिक्षा नहि; अपितु अपन संगीत कलाक मूल्य मङैत हो, अपन पारिश्रमिकक याचना करैत हो। साधारणतः आन्हरक स्वरमे झंकारो अपूर्व रहैत छैक। कतेकक कहब तँ ईहो छैक जे सूरदास सभकेँ प्रकृतिक दिससँ स्वर वरदान रूपमे प्राप्त भेल रहैत छैक।

किन्तु एहि आन्हरक स्वरमे हमरा कोनो आकर्षण नहि बुझबामे आयल। आकर्षण छलैक ओकर शब्दमे। एहि शब्दमे, एतेक पैघ जीवन-दर्शनक शब्दमे भीख मङैत आइ धरि दोसर भिखारि नहि भेटल छल। जतेक काल धरि गाड़ीपर चढ़ल रह-

लहुँ, रहि-रहि एहि शब्दक रहस्यकेँ उद्घाटित करबाक दिशामे बुद्धि ओझरायल रहल।

एक लोकोक्ति मोन पड़ल—'एक मावेँ जाड़ नहि जाइत छैक' अर्थात् मनुष्यके एके वस्तुक प्रयोजन अनेक बेर पड़ैत छैक। ने जानि; समाजमे रहलाक कारणेँ कखन ककर कोन प्रयोजन पड़ि जाइत छैक तकर ठेकान नहि। प्रायः जकरा आगाँ ई आन्हर हाथ पसारैत अछि तकरा ई अहंभाव नहि भऽ जाइक जे ई मङ-निहार दीन अछि आ हम पैघ छी। तेँ एहि शब्द द्वारा ओ इंगित करैत रहैत छैक। अपना मोने एहि प्रकारेँ ओहि शब्दक व्याख्या करैत मानसिक विचारक तारतम्यकेँ स्थगित कयलहुँ आ सोचलहुँ जे घुरतीमे ओहि आन्हरसँ भरि इच्छा गप्प करब।

घुरतीमे संयोगसँ ततेक राति कऽ ओहि स्टेशन पर अयलहुँ जखन भिखारिक कोन कथा; पानो-बीड़ी-बलाक कोनो शब्द कर्णगोचर नहि भेल। ई शब्द रहि-रहि कऽ स्मृति-पटलपर आ विचार-तन्तुपर कखनहुँ कऽ ओझरा जाइत छल।

दोसर बेर ओहि बाटेँ यात्रा करबाक पुनः संयोग लागल। एहि बेर पहिनेसँ ठेकनौने छलहुँ जे ओहि आन्हरसँ अवश्य कऽ गप्प करबे करब। अंगारघाट स्टेशनमे गाड़ी प्रवेश कलयक तँ हम खिड़कीसँ मूड़ी बाहर कऽ लेलहुँ। आँखि द्रुतगतियेँ सौंसे प्लेटफार्म पर दौड़ि गेल। कान अकानि कऽ ओ शब्द सुनबाक हेतु सतर्क भऽ गेल, मुदा आहि रे कुसंयोग! ने आँखिकेँ कतहु ओ स्वरूप देखि पड़लैक ने कान पुनः ओ शब्द सुनि सकल।

थोड़ेक निराशा भेल आ मोनमे भेल जे मरि-हरि गेल होयत। पुनः ओ शब्द मोनमे अनुगुंजित होअऽ लागल—बाबू जाड़ा फेनो अओतो।

चिन्तनक चर्खा जखन चलऽ लगैत छैक तखन मोट-पातर, स्थूल सूक्ष्म अनेक प्रकारक विचारक सूत्र बाहर होबऽ लगिते छैक। से मोनमे एहिना विचार सभ आबऽ लागल—अवश्य ओ आन्हर परिस्थिति विशेषवश भीख मङबाक हेतु बाध्य भेल होयत अन्यथा एहि रूपें व्यंजनामे बाजि भीख मङबाक विशेषता ओक-रामे कतऽसँ अबितैक? ई सभ गुनिधुनि करिते छलहुँ तावत गाड़ी खगड़िया स्टेशन पर आबि कऽ ठाढ़ भेल आ तुरन्त कानमे ओ शब्द पहुँचल—बाबू! जाड़ा फेनो अओतो।

हम विस्फारित नेत्रें प्लेटफार्मपर ओहि आकृतिकें हेरऽ लगलहुँ। ओ ओहिना एक हाथें लाठी टेकने दोसर हाथें गाड़ीक डिब्बा सभकें हँसोथैत आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत हमरा डिब्बा लग पहुँचल। हम कहलिऐक—सूरदास! ऊपर आबह, तोरासँ बहुत रास गप्प करबाक अछि।

हमरासँ गप्प? आ से बहुत रास? बाबू! अपने के छिकी हमरा नचारसँ अहाँकें कोन गप्प होत? हमरा तऽ अइ दुनियाँ-दराजमे कोइ ने ऐछ। आब तऽ बीस बरिस भऽ गेल एनाहिते भीख मङैत। केनाहू अइ चोलाकें बदलबाक दिन देखि रहलीयऽ, हमरा सँ कोन गप्प करब सरकार? जाले अहाँ सँ गप्प करब ताले दू-चारि कोठली लङ घूमब तँ कोनो दाता किनसियाइत भिजि जाइथ।

सूरदास अति विनीत भावेँ कहि गेल आ बुझना जाय जे ओकर अन्ध आँखि भीतरसँ जेना देखबाक प्रयत्नमे लागल होइक। आँखि बैसल नहि छलैक, ने फुल्ला माड़ा अथवा गेजड़ किछु छलैक, अपितु सम्पूर्ण आँखि दुरुस्त छलैक, केवल दुनू आँखिक करिया डिम्हा सोपकेर बट्टम जकाँ उज्जर सपेत।

हम कहलिऐक-सूरदास! आइ दू बरखसँ हम तोरा तकैत छलियह। तेसर बरख तोरा अंगार-घाट स्टेशनपर देखने रहियह, ओही ठाम इच्छा भेल जे तोरासँ गप्प करी,मुदा गाड़ी ततनो काल ठाढ़ भेलैक जे जावत तोँ हमरा डिब्बालग पहुँचलह तावत गाड़ी फूजि गेलैक। घुरतीमे ततेक राति कऽ गाड़ी अयलैक जे स्टेशन पर क्यो नहि छलैक। परुकाँ साल हम एमहर अयबे ने कयलहुँ। एहि बेर अंगारघाटमे फेर तोरा तकलियह तँ नहि देखि पड़लह। हम निराश भऽ गेलहुँ जे आब तोरासँ भेट नहि भेल। मोनक बात मोनेमे औनाइत रहि गेल, येह गुनिधुनि मोनमे होइत छल कि तोहर आवाज सुनलियह। आबह, ऊपर आबह, कनेक अपन परिचय देह। तखन जे बात पुछैत छियह तकर जबाब दिहऽ।

एहि बेर सूरदास गाड़ी मे उत्सुकतापूर्वक आबि गेल। हाथ पकड़ि कऽ कहलिऐक—बैसह एहि ठाम। मुदा ओ सीटपर किन्नहु ने बैसल। कहलक—बिनु टिकस अइ पर बैठब पाप छियै बाबू आ हम तइ जोकर नइ छी जे ओइठिन बैठी। एतबा कहैत ओ दुनू बेंचक बीचमे नीचामे बैसि गेल। बैसैत पुछलक—बाबू! अपनेक घर कहाँ ऐछ?

हम कहलिऐक—पहिने तों हमरा प्रश्नक उत्तर देह, तखन हम तोरा प्रश्नक उत्तर देबह। पहिने ई कहह जे तोहर घर कतऽ छह ?

'जहँइ धड़ तहँइ घर।' हमरा घर-दुआरिसँ कोन मतलब, आब अइ-दऽर दुनियाँमे हमरा के ऐछ जेकरा ले' घर दुआरि राखब। पहिने अगारघाट टीसनपर भीख मङै छलौं, ओइ ठिन भिखमंगा कम छलै' महज रातिमे ओइठिन अराम करऽके बास्ते बड़ा तकलीफ होइ छल। खगड़ियामे बड़ भिखमंगा, अइ ठिन कोइ जल्दी भीखे ने दै छै, महज अइठिन मोसाफिर खाना मे अराम करै मे कोनो खास तकलीफ नइँ होइ छै। तें साल भरिसँ एही ठिन रहै छिऐ।

हम पुछलिऐक-सूरदास ! आन आन आन्हरकें सुनै छिऐ सीताराम सीताराम कहिकऽ भीख मङैत रहैत छैक। तोरा मुँहे भगवानक नाम नहि सुनैत छियह से किएक ?

'बाबू! हम भगवानक नाँ कँ भजा कऽ नै खाय चाहै छी। जे सीताराम सीताराम कहैत रहैयऽ तेकरा सबकें धेयान ढेउआपर रहै छै' ऊ ढेउएकें सीताराम बुझै छै। बाबू ! भगवानक नाम कण्ठसँ नै, हिरदयसँ लेबाक चीज छै। पापीकें हिरदय सँ भगवानक नाम बहराइते ने छै। असगरमे बैठल रहै छी, पड़ल रहै छी तँ कोसिस करै छी जे हिरदयसँ भगवानक नाम ली, महज ई पापी मनुआँ दुनियेंमे बौआइत रहैअऽ।

हम फेर पुछलिऐ—सूरदास ! कहैत छह जे क्यो ने अछि, तखन मन कतऽ बौआइत छह ? तों अपना जीवनक प्रसंग किछु कहबह ? बड़ उत्सुकता अछि ।

ओ किछु काल अतीतमे डूबि गेल । ओकर ओहि श्वेत आँखिमे नोर डबडबा कऽ भरि गेलैक । बाजल—बाबू ! आइ धरि ई बात कोइ ने पुछलक । हम अहूँके अपन दुखड़ा कहि नहि दुखाबऽ चाहै छी । की करब हमर दुखड़ा सुनिकऽ ?

हम कहलिऐक--सूरदास ! तों जे कहैत छहक बाबू ! जाड़ा फेनो अओतौ एहिमे हमरा बहुत अर्थ नुकायल भेटैत अछि । हमरा होइत अछि जे कोनो कुसंयोगसँ तोहर आँखि खराब भऽ गेलह ।

बुझना गेल जे ओकरा अन्तरक वेदना बान्ह तोड़ि कऽ बाहर भऽ गेलैक । मोतीक माला जकाँ नोरक बुन्द गालपर दऽ झहरऽ लगलैक । बाजल—बाबू ! आब हमर राम-कहानी सुनिये लू ।

हमरा बाप एक दिन तीन-चारि चटकन मारलक । अपना गिरहतक ओइ ठिन हम भैंसी चरबै छलिऐ । एक दिन भोर-हरबामे भैंसीक पीठेपर निन्न भऽ गेल । से एक गोड़ाक बाड़ीमे पैसिकऽ भैंस सभ टा भाँटा खा गेलै । बाड़ीबला भैंसकेँ ढाठमे दऽ देलकै । एही अपराधमे बाबू हमरा मारलक । हम भागिकऽ समस्तीपुर चल एलिऐ । ओइठिन एक टा गाड़ी मे बैठलिऐ से ओ गाड़ी दरभंगा नेने चल गेल । ओइ ठिन टी. टी. पकड़लक,

महज हमरा लङ तँ किच्छोने छल। नंगा झाड़ कऽ देख लेलक आ दू-चारि चटकन मारि कऽ बैला देलक। टीसनसँ सोझे उत्तर मुँहेँ विदा भेलिऐ लेन धेने। देखलिऐ जे मौगी आउर, छौंड़ी आउर लेनपर जरलाहा कोइला बीछै छै। बाबू! हमहूँ कोइले बीछऽ लगली। फाटल एक गो गमछो छल। ओहीमे जमा केलिअइ। पनरह सोलह बरिस के उमेर रहय। एक गो छौंड़ी कोइला बीछैत रहै। ऊहे हमरो अपना जरे बजार नेने गेल। बजारमे कोइला बेचबा देलक। पुरना ढौआ चलै छलै। साढ़े तीन आना पाइ भेल। दू गो पाइ ओइ छौंड़ीकेँ दऽ देलिऐ।

कनेक काल सूरदास चुप भऽ गेल। जेना पुनः कोनो अतीतमे डूबि गेल हो। एक दीर्घ निसास लेलक आ कहब आरम्भ कयलक— एनाहिते पाँच-छौ दिन बीत गेल। सतुआ-उतुआ लऽ के खाइ छली आ कोनो दोकानक बहरीमे पड़ि रहैत छली। पाँच-छौ दिनके बाद दू तीन दिन ऊ छौंड़ी नै आयल तँ मोन केनादन करै लागल। एक गो बुढ़ियाकेँ पुछलिऐ। पहिने तँ लाज होअय, महज तेसरा दिन नहि रहल भेल तँ पूछि देलिअइ। ऊ बुढ़िया कहलक जे परबतियाकेँ बोखार लागल छै। ओइ दिन बाबू! ओहि बुढ़ियाक जऽरे परवतियाक ओइठिन गेली, बोखार उतरि गेल रहै। सबुरदानाके पंथ पड़ितै, महज ओकर बुढ़िया माय सिरहन्नामे बैठल रहै। हम धखाइते अङनामे गेलिऐ तँ परबतिया उठिकऽ बैठि गेलै। बुढ़िया पुछलक— कोन आसरम छऽ? कहलिऐ दुसाध। दुसाध? बाबू! ऊहो दुसाधे रहै।

ओकरा लड़िका नइँ रहै, बाप रेलबीमे डरेबर रहै। हमहूँ दुसाधे छी से सुनिकऽ जेना बुढिया‍के छाती सूप सन भऽ गेलै। परब-तियाके हालचाल पुछलिऐ तँ कहलक जे बोखार उतैर गेलै। बाप अबै छै तँ बजारसं सबुरदाना आनि देतै। आइ पंथ दऽ देबै। 'बाबू! हम साँझे उठलिऐ आ अपने लगक ढोआसँ एक आना के सबुरदाना दौड़ले कीन कऽ आनि देलिऐ। जा ले पंथ बनलै आ छौंड़ी खाइत रहै ता ले ओकर बापो आबि गेलै। ओइ दिन सँ ऊ बुढ़बा हमरा अप्पन लड़िके जकाँ मानऽ लागल। ओकरे ओइठिन रहऽ लगली। अप्पन बाप बिसैर गेल, माय पहिने मैर गेल छल।

किछु क्षण चुप भऽ सूरदास दू बेर थेप घोंटलक। हमरा आब चिन्हबामे भाङठ नहि रहल। सूरदास फेर कहब आरम्भ कयलक—बाबू! बादमे चलि कऽ ओइ पारबतीक महादेब हमरे बना देलक बुढ़बा। अपना पिलसिन भेट गेलै तँ अपना ओजीमे रेलबी के नोकरी धरा देलक। भगवान पारबती के कोइखमे कातिक गनपति दू गो चेडना सेहो देलखिन। बड़ सानसँ जिनगी चलै छल बाबू! बादमे हम टेन के डरेबर भऽ गेली।

वेदनाक एक तरंग सूरदासक आँखिकेँ जोरसँ आप्लावित कऽ देलकैक। दू मिनट धरि जेना ओहि वेदनाकेँ पीबि जयबाक चेष्टामे रहल। देहपरक अङोछासँ आँखि पोछलक, नाककेँ झाड़लक आ साहस बटोरि कऽ कहऽ लागल—महज अपने हाथेँ हम अपना दुनू लड़िकाकेँ बलिदान कऽ देली ……।

हम कहलिऐक—तोहर नाम रामफल थिकह ? रजुआ, भजुआ तोरे बेटा छलह ? डेढ़बज्जी गाड़ीमे सिगनल लग जाहि ट्रेनकँ तोँही हँकैत आबि रहल छलह ताहि ट्रेनसँ दुनू भाँइ कटि गेलह ?

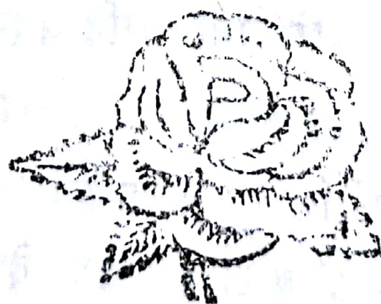
सूरदास हँसोथि कऽ दुनू पैर पकडि लेलक आ बाजल—बाबू ! अहाँ बूढ़ा गुरूजी क लड़िका छी ? हम पुछलिऐक-से तों कोना बुझलह ?

बाबू ! हम बोली अकानैत छलीयऽ। सूरदासक अन्तरमे जेना वेदनाक स्थानपर ममता उमड़ि आयल होइक।

हम कहलिऐक-हँ, कटहरबाड़ीक प्राइमरी स्कूलमे हमहूँ दुनू भाँइ रजुआ भजुआक संगे पढ़ैत रही। बाबू ! अहाँ बतहू बाबू छी कि जीबू बाबू ?

उत्तर देलिऐक—हम बतहू छी, जीबूक तँ ओकरे अगिला साल देहान्त भऽ गेलैक।

सूरदास, नहि, नहि रामफल उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। हमर सौंसे देह हाथसँ हँसोथि लेलक। बुझना गेल जेना हमर शरीर स्पर्शसँ ओकरा एक प्रकारक सान्त्वना भेटल होइक।



हल्लुक चोट

की कहलह ? सुरेन्द्र बाबू त्याग पत्र दऽ देलनि ? जेना बिजलीक करेंट लागि गेल होइनि तहिना विनोदकेँ अनुभव भेलनि । विनोद जखन साइकिलसँ विद्यालय जा रहल छलाह तँ बाटे मे प्रमोद ई समाचार कहलकनि । प्रमोद नीक जकाँ जनैत छल जे सुरेन्द्र तथा विनोद अन्तरंग मित्र छथि, मुदा एतेक अनुमान नहि छलैक जे एहन समाचार सुनि विनोदकेँ मर्मन्तुद आघात पहुँचि सकैत छनि । एहि दूनू परिवारक एहन घनिष्ठताक कोनो अनुभव प्रमोदकेँ नहि छलैक विनोदक हाथसँ जेना साइकिल डगमगाय लगलनि । कतबो प्रयत्न करथि, परन्तु हैंडिल सोझ डाँड़ि पकड़बे ने करनि । पैरेँ नहि जा सकैत छलाह । विद्यालय पहुँचबा मे विलम्ब भऽ जयबाक भय छलनि । अन्तरमे जेना बिहाड़ि उठि गेल होइनि । करुणाक लहरि रहि रहि कऽ करेज केँ उधका देल करनि । विगत दस वर्षक घटनाचक्र मोनक पर्दा पर आबऽ लगलनि । एक एक घटनाक विश्लेषण करैत लड़खड़ाइत साइकिल पर आगाँ बढ़ल जा रहल छलाह ।

ओइ सँ दस वर्ष पहिने एक दूबर-पातर सुपारीक गाछ सन नाम, ने गोर ने कारी, जीवनक सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सँ जेना अनभिज्ञ, संसारक लम्बाइ चौड़ाइ सँ जेना सर्वथा अपरिचित,

छौ पाँचक ज्ञानसँ असंपृक्त, एक अद्‌भुत संसारक कल्पना मे डूबल एक नवयुवक ओहि संस्थामे नियुक्त भेलाह जाहि ठाम विनोद सात वर्ष पहिनेसँ काज कऽ रहल छलाह।

यद्यपि विनोद वयसमे सुरेन्द्र सँ जेठ छलथिन, किन्तु आजुक एहि वैज्ञानिक युगक दृष्टिएँ विनोद साहित्यक विद्यार्थी रहलाह जे एक सड़ल विषय गनल जाइत अछि आ सुरेन्द्र विज्ञानक छात्र, आब छात्र नहि, अध्यापक। छात्र जीवनक नाव परसँ पैर उठा कऽ अध्यापनक जहाज पर रखने छलाह जाहि-ठाम हुनका अपन बुद्धिक विलक्षणता, अपन प्रतिभा, अपन योग्यता तथा कार्यदक्षताक प्रामाणिकता सिद्ध करबाक छलनि, जाहि ठाम जीवनक संकीर्ण एवं वक्ररेखा सँ बनल एकपेड़ियाक परिचय प्राप्त करबाक अवसर भेटितनि, जाहि गलीमे आबिकऽ केहन केहन बुधियार केँ चक्रबिदोड़ लागि जाइत छनि।

विनोदक आँखिक सोझाँ सभसँ पहिने ओ छोटसन स्थान नाचऽ लगलनि जाहि ठाम सुरेन्द्र अयलाक बाद डेरा देने छलाह, डेरा की छलनि, मुसाफिरखाना सँ अन्तर एतबा अवश्य छलैक जे मुसाफिरखानामे भोजनक व्यवस्था तँ नहि रहैत छैक, एहि ठाम भोजन ओ शयनक सेहो व्यवस्था भऽ जाइत छलैक। कयो सुरेन्द्रक आन नहि छलनि, परिचित-अपरिचित सभ अपने छलनि 'वसुधैव कुटुम्बकम्'। खास कऽ आजुक युगमे पाइक एतेक महत्त्व होइत छैक, एखन जे चऽरक सम्बन्धेँ चिन्नोढ़ मामा बनि बनि चारूकात चक्कर काटि रहल अछि, अपन कहयबाक स्वांग रच-

निहार पाइक अभावमे एहि बाटेँ चलबो उचित नहिं बुझत आदि विषयसँ एकदम अनभिज्ञ। सुरेन्द्रकेँ तँ अपना योग्यताक अन्दाज नहि छलनि। ओ ईहो नहि बुझैत छलथिन जे हुनक मधुर स्वभावक कारणेँ मित्रक संख्यामे चक्रवृद्धि ब्याज जकाँ वृद्धि भेल जा रहल छनि।

विलक्षणता तँ ई जे ऊपर सँ ओ एकदम क्रूरजकाँ लगैत छलाह। छात्र सभतँ हिनकर गर्जन सुनि कS ओहिना लंक लैत छल जेना फटाकाक शब्द सुनि चिड़ै चुनमुन्नी, मुदा हृदयसँ छात्रमंडली हिनका प्रति श्रद्धा करैत छलनि आ आदेशक पालनो। एतेक धाख तँ प्रायः प्रधानाध्यापकोक नहि होइत छलैक।

छात्र समुदायमे एहनो छात्र तँ छल जकरा छौ छौ मास धरि एकेटा पेण्ट आ एकेटा फाटल चीटल अंगा लS गुजर करS पड़ैत छलैक। एहन छात्रक प्रति आरो बेसी सहानुभूति। टाका नहि जुटबाक कारणेँ जाहि वर्गक सुरेन्द्र वर्ग शिक्षक छलाह ताहिवर्गक छात्रक नाम तँ नहि कटि सकैत छलैक। शिक्षक आ पितामे कोनो विशेष अन्तर तँ नहि होइत छैक। एकटा जन्मदाता तँ दोसर विद्यादाता। तखन अपना कलम सँ कोनो असमर्थ छात्रक नाम काटि देब कोना सह्य कS सकैत छलाह? यद्यपि शास्त्रीय वचन सँ सुरेन्द्र केँ जीवन मे कहियो कोनो सरोकार नहिं रहलनि। हिनक पिता एक तेहन विभागमे रहैत छलथिन जाहि विभागमे क्रूरता गुण बुझल जाइत छैक।

एहनै वातावरणमे पालल लोक इस्पात जकाँ टूटऽ जनैत अछि, झूकऽ नहि। तेहना स्थितिमे सुरेन्द्र केँ संस्कृतसँ भेट कतऽ जे विद्यादाता जन्मदाता कन्यादाता आदि पंच पितर सँ परिचित होथि। संस्कृतक कोन कथा, हिन्दीओमे एक दिन वर्गमे, जहिया सुरेन्द्र दसमे वर्गमे पढ़ैत छलाह, शिक्षक पुछल-थिन लिंग कतेक प्रकारक होइत छैक तँ सुरेन्द्र गौरवक संग उत्तर देलथिन–दू टा, एकटा कलिंग दोसर दार्जिलिंग। कलिंग विज-यक बाद सम्राट अशोककेँ विराग भऽ गेलनि आ दार्जिलिंग बंगालक गर्मीमे राजधानी रहैत अछि। किन्तु सुरेन्द्रक अन्तरमे निवास करऽवला शिक्षकमे पिताक ओ सभ गुण विद्यमान छलनि जाहि गुणकेँ देखि छात्र आत्मसमर्पण कऽ देल करैछ। मधुर स्नेहसँ सिक्त भऽ ओ अपनाकेँ भाग्यवान मानऽ लगैछ।

विनोद सोचैत जा रहल छलाह–नगरमे कोन रूपेँ सुरेन्द्रक ख्याति बढ़ैत गेलनि संगहि आयकेर स्रोत कोना बढ़ैत गेलनि, किन्तु सुरेन्द्रक स्थिति जहिनाक तहिना, कोनो परिवर्त्तन नहिं, अपितु आर्थिक स्वस्थताक बदलामे मानसिक ओझराहटिये बेसी। एकर कारण छलैक–अतिथि लोकनिक आदर सत्कार, मित्र लोकनिक मनोरंजन आ गरीब छात्रक सहायता। खर्चक अनुमान केवल एही सँ कयल जा सकैछ जे चाह एवं पानवला एक मासक हिसाब मासक अन्तमे बिरानबे रुपैया सुनौने छलनि। संयोग सँ विनोद सेहो ओतऽ उपस्थित छलाह। हिसाब सुनि कऽ चौंकि उठल छलाह–एना बढ़बाँढ़ि खर्च! शिक्षाकेँ सम्पूर्ण

छोड़ि एक स्कूल मे नौकरी करब जीवनमे ओझरायब छोड़ि आर की कहल जा सकैत अछि ? समान योग्यता रखितहुँ शिक्षा विभागक ई दरिद्र वेतनक्रम स्वीकार कऽ नौकरी करब जीवनक बाध्यते कहल जा सकैछ। बिरानबे रुपैया मासमे चाह पान पर खर्च करबाक ओकाति रखनिहार एम० एस-सी० कियेक ने करत जे बी० एस-सी० मेल नाक रगड़ैत रहत ? एकान्तमे एक दिन विनोद सुरेन्द्रक ध्यान आकर्षित कयने छलथिन आ सुरेन्द्र जे सफाइ देने रहथिन सेहो विनोदकेँ स्मरणे छनि।

सुरेन्द्र सफाइ दैत कहने रहथिन—हुनकर बाल्यकाल बहुत सुविधा तथा आरामसँ बीतल छनि। ओहि समय जे भावी जीवनक कल्पना छलनि से आइ स्वप्न बनि चुकल छनि। ओ जे कल्पना स्वप्नो मे नहि कयने छलाह से समस्या सोझाँ मे अनुक्षण मुँह बौने रहैत छनि। ओहि समस्या सभसँ ओ लड़ऽ चाहैत छथि, मुदा आजुक संसारक एहि दुरंगी नीतिक कारणेँ हुनक सभ प्रयास विफल भऽ जाइत छनि। हुनका अनुभव होइत छनि जे उच्च आदर्शक स्वांग रचनिहार, इमानदार बनबाक ढोङ कयनिहार, सत्यक उपदेश छँटनिहार वस्तुतः व्यवहारमे आदर्शच्युत, बेमान तथा घोर असत्यवादी सभ अछि। ओहन लोकक वैयक्तिक जीवनमे आदर्श ताकब दिनमे तारा ताकब सन थिक।

सुरेन्द्र कहैत गेलथिन—पहिने विश्वास छल जे शिक्षकक जीवनमे गेलासँ अपार शान्ति प्राप्त होयत। किछु सोचबाक, किछु विचारबाक तथा जीवनमे आयल ओझरौटकेँ सोझरयबाक

अवसर प्राप्त भऽ सकत, किन्तु एहिठाम छल-छद्म, कपट प्रबन्ध देखबामे आबि रहल अछि। एहू ठाम ओ पवित्र वातावरण नहि जाहि हेतु अन्तर आकुल अछि। आब क्रमहिं उत्साह मन्द भेल जा रहल अछि।

विनोदक विचार सूत्र टूटि नहि रहल छलनि। ओ सोचैत गेलाह–कोना सुरेन्द्र एहि बीच विवाह आदि कयलनि। कोना धीया पूता, सांसारिकताक समस्त उत्तरदायित्व सुरेन्द्रक माथपर अयलनि आ एही क्रममे कोना ई दस वर्ष बीति गेल।

विनोदकेँ होइत छलनि जे ई घटना सभ जेना काल्हिए परसू घटित भेल हो। एहि बीच सुरेन्द्रक जीवनमे यदि किछु परिवर्तन भेलनि अछि तँ एतबे जे पहिने शरीरेँ सुरेन्द्र मार सीकी लक-तक छलाह, आब स्थूल कायः प्रतिष्ठितः भऽ गेलाह अछि। हँऽ एतबा अनुभव अवश्य कऽ रहलाह अछि जे जीवनक एकपेड़िया केँ आरो संकीर्ण बना देबऽ बला अमतीक काँट दूनू भाग सँ बढ़ल आबि रहल छनि जकरा काटिकऽ फेकबाक उतरदायित्व क्रमहिं बढ़ि रहलनि अछि। ओ ईहो अनुभव करऽ लगलाह अछि जे एहि समस्या सभसँ संघर्ष करबाक हेतु हुनक पौरुष स्फूर्ति नहि रहलनि अछि, थाकि गेलनि अछि आ तकर कारणो हुनक अपन आन्तरिक दुर्बलता थिकनि। हँऽ एकरा दुर्बलते कहल जा सकैछ–अपना विनम्रताक कारणेँ जीवनक भित्तिकेँ सुदृढ़ करऽ बला आर्थिकतत्त्वकेँ बुझितो अर्थक उपेक्षा कियेक कऽ रहल छथि!

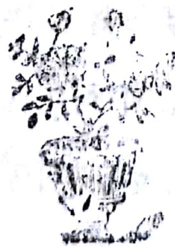
तन्द्रिल मनुष्यकेँ जेना छोटोसन धक्का लगलासँ भक् टूटि जाइत छैक तहिना विनोदक कहलापर सुरेन्द्रक भक् टूटि गेल रहनि। सुरेन्द्रकेँ आरो किछु नहि चाहियनि, चाहियनि मात्र हुनक द्वारा कयल गेल श्रमक मूल्यांकन। संस्थाक प्रतिष्ठाकेँ बढ़यबामे जे हुनक अथक श्रम छनि तकर मूल्य टाकामे नहि, प्रशंसात्मक वचनमे, परन्तु ततबो प्राप्त होयबाक आशा नहि।

एहि एक धक्कासँ अनुभव होअऽ लगलनि जे युवावस्थाक देहरि पर पैर रखलाक बाद जाहि उत्साहकेँ जीवनक पाथेय बुझैत छलाह से क्रमहि घटि रहलनि अछि, जेना वार्द्धक्य समीप आबि रहलनि अछि; जीवनी शक्तिक ह्रास भेल जा रहल छनि। हुनका अनुभव भेलनि जे जीवनमे मोह उत्पन्न भऽ गेलनि अछि-संस्थाक मोह...... एक संकेत पर आकाश सँ तारा तोड़ि अनबाक हेतु उद्यत छात्र समुदायक मोह.... ओहि डेराक मोह...... जकर भाड़ा दस वर्ष सँ चुकबैत आबिरहल छथि। अपन आमोद प्रमोद सँ, हास परिहाससँ, जीवनकेँ सरस बनौनिहार मित्रक मोह, मोह....मोह....मोह। ओह! एक झटकामे आइ ओहि मोहकेँ तोड़ि लेलनि।

विनोदक मस्तिष्क-चर्खा पर विचार सूत बनैत ओ लेपटाइत गेलनि। अवश्य सुरेन्द्र उच्च शिक्षाक हेतु त्यागपत्र देलनि अछि। विनोदक मनक उत्सुकता बढ़ैत गेलनि आ पैर शिथिल होइत गेलनि जाहि सँ साइकिलक गति मन्दसँ मन्दतर होइत गेलनि।

एखन विनोदके सुरेन्द्र द्वारा कयल गेल काल्हुक प्रश्नक आशय स्पष्ट होइत गेलनि। सुरेन्द्र काल्हि पुछने छलथिन— जीवनक लक्ष्य दिश चलि पड़ल व्यक्तिकेँ बाटमे भेटल छायाक प्रति जँ मोह उत्पन्न भऽ जाइक तँ ओहि बटोही केँ की करबाक चाहियैक ?

विनोद उत्तर देने रहथिन-आरामकेँ आराध्य बुझनिहार व्यक्तिकेँ लक्ष्य धरि पहुँचबाक आकांक्षा नहि करबाक चाहियैक। आरामतँ जीवन-बिनाशक कीटाणु थिक। जाहि व्यक्ति पर एहि कीटाणुक आक्रमण भऽ गेलैक ओकर जीवन सड़ि गेलैक, सैह बुझबाक चाही। एही उत्तरक प्रतिक्रिया स्वरूप सुरेन्द्र आइ त्याग पत्र दऽ देलनि। ओ उच्च शिक्षा प्राप्त करताह। कतेक दृढ़ता छनि हुनकामे ! विचारक एहि दृढ़ताक कारणेँ विनोदक हृदयमे आनन्दक लहरि आ वियोग जन्य दुखःक लहरी टकरा गेलनि। सुधि नहि रहलनि जे साइकिल पर छी। स्कूलक फाटक लग जाइत जाइत साइकिल टकरा गेलनि। छात्र सभ हाँ हाँ कहि उठल। बाहरक चोटक अनुमान सभकेँ भेलैक, मुदा अन्तरक चोट हल्लुक भऽ गेल छलनि।



जल समाधि

आब एहन आकुलता कियेक ? दुखनीक माय बिनु एको छन रहले ने जाइत छलौक ? तोरे बात सत्त जे ओ तोहर स्त्री नहिं छलौक, तखन ई छटपटाहटि कथीक ? जहिया ओकरा संग लऽ कऽ बम्बइ पड़ा अयलें तहिया ई खेयाल रहलौक जे ई ओ ककरो बहु, ककरो बेटी आ ककरो बहिन थिकैक ? आइ अनका संग चल गेलौक तँ गिरहतनी छलौक आ संग रखने रहैत छलही तँ बहु छलौक ? एहि दू बरखमे कियेकने ककरो कहने छलही जे ई हमर स्त्री नहिं थिक। आइ इज्जति पर पड़लौक तँ अपनाकेँ नुकबऽ चहैत छेँ। एखन जेना तोरा होइत छौक तहिना सभकेँ होइत छैक। ई कियेक बिसरि जाइत छेँ जे बहु बेटी जेहने अपन तेहने अनको !

अपन अन्तरंग, अपन हित-बन्धु सभक मुँह सँ जखन खखनाकेँ एहन उत्तर भेटऽ लगलैक तँ आत्मा आक्रोश कऽ उठलैक। समाजक सोचबाक ढंग पर विस्मय होअऽ लगलैक।

आइ डेरा पर पड़ल लिफाफकेँ देखि आ ओहिमे बन्द पत्रकेँ पढ़ि आश्चर्य, विस्मय, क्षोभ आ दुःख सँ अभिभूत खखना सोझे पोस्ट आफिस आयल आ पाँचो सय टाका, दुखनीक मायक पत्र आ अपना दिससँ एक पत्र लिखि भागमन्त

बाबूक पिताक नामे बीमा कऽ देलकनि आ तखन पहुँचल समुद्र-तटपर। महालक्ष्मीकेँ प्रणाम कयलक, महाबीर केँ प्रणाम कय-लक आ मन्दिरक पाछूमे जाय बैसि रहल। ओमहर समुद्र गरजि रहल छलैक, एमहर खखनाक आत्मामे ग्लानि गर्जन कऽ रहल छलैक। ओमहर समुद्रक तरंग तट सँ टकरा कऽ मूर्च्छित भऽ रहल छल आ एमहर खखनाक हृदयमे विचार-तरंग टकरा कऽ एकरा मूर्च्छित करबा पर लागल छलैक।

आइसँ केवल दू बरख पहिने जखन खखना अपना गिर-हतक ओहिठाम महिसिक चरबाहि करैत छल, सत्रह अठारहक वयस छलैक। एहि सँ पहिने नवका युगक देखाउसि सँ बाप गामक प्राइमरी पाठशालामे नाम लिखा देने छलैक कऽ टऽ कऽ अक्षर लिखऽ पढ़ऽ आबि गेल छलैक, मुदा अन्तमे पढ़बामे एकर मन्थर गति देखि आ बैसल ठाम अन्न-वस्त्र देबामे अपनाकेँ अक्षम जानि गिरहतक ओतऽ चरबाहि धरा देने छलैक। ईहो महिस चरबैत छल, थड़ि खड़रैत छल, घास-पात अनैत छल, चूड़-धूआँ करैत छल, मुदा इसकूलक चसकल मोन कखनहुँ कऽ कसमसा उठैत छलैक। ने दुनियाँदारी सँ परिचय भेल छलैक ने छल-कपट सँ दर्शन। मुदा जाहिया सँ बम्बइमे कमा-इत छोटका गिरहत, द्विरागमन कयलथिन तहिया सँ खखनाक मोन आरो रमि गेलैक।

खखना दछिनवारि गामवाली नवकी गिरहतनीक नूआ खीचैत छलनि, छोटका मालिककेँ तेल मालिस कऽ दैत छलनि।

ई जँतैत रहैत छलनि आ भागमन्त बाबू बम्बइक वर्णन कऽ सुनबैत रहैत छलथिन। जहिना खिस्सा सुनबामे मोन लगैत छलैक तहिना नूआ खिचबामे। गम-गम करैत नूआ आ गम-गम करैत साबुन।

द्विरागमनक मास दिनुक बाद छोटका गिरहत भागमन्त बाबू अपना नौकरी पर चल गेलथिन। कनेञाकेँ एको रत्ती नीक नहिं लगैत छलनि। ने ननदि ने देयोर। आङनमे बूढ़ी सासु आ बाहरमे बूढ़ा ससुरक अतिरिक्त एक मात्र खवना। खुट्टा पर लगहरि महिंस से एक नहिं, दू दू टा। महिंस सभ बेस दुधगरि। बूढ़ी बेचारीकेँ एकटा बेटा आ सेहो परदेशी। दूध देखि मोन कूही होइत रहैत छलनि। तेँ छाल्ही बाहर कऽ घिउ बनबैत छलीह आ दूध दही पेयच कऽ सभ गोटे खाथि। जँ टोल परोसमे ककरो बेर बेगर्त्ता लागि गेलैक तँ कहियो काल बेचिओ लेथि। पुतोहु नव आइलि रहथिन से बूढ़ीकेँ होइनि जे कोंढ़मे सटने रहियनि। जँ नहि खा होइनि तँ आग्रह कऽ खोअबथिन। भगवान सहाय भेल रहथिन तेँ आगाँ पर किछु उमेद सेहो भऽ गेल रहनि।

दुपहरमे खोआ पिया बाङ आ टकुरी लऽ बहिनपाक आङन चल जाथि जे कनेञा आराम करथु। बूढ़ा घरक आगुए मे दस गाछ नव गछुली कलम लगौने रहथिन। बीच-बीचमे भाँटा, रामझिमनी कस्तूरीलता सभक गाछ लगा देने रहथिन। टाट पर घेरा, झिमनी, सीम लागल छलनि। बीचमे एकटा

खोपड़ी, ताहि खोपड़ीमे मचान आ खोपड़ीक चारपर बेस लुह-लुहार सजमनिक लत्ती। तेँ बूढ़ा बेचारे दुपहरमे ओही खोपड़ीमे जाकऽ आराम करथि।

पहिने खखना खा-पी कऽ महिसिक घरक मचान पर जा कऽ ओंघड़ाइल छल, मुदा जहिया सँ छोटका गिरहत बम्बइ चल गेलथिन तहियासँ गिरहतनीक संग तास खेलायल करय। ने जानि नवकी गिरहतनीक लग ओकरा किबेक नीक लगैक। ओ चाहैत रहय जे नवकीये गिरहतनी भानस भात करथि। ओ जँ पनपिआइमे बासियो मड़ुआ रोटी देथिन तँ बिनु नोनो मेरिचाइक गराँ नहि लगैक। कहियो जँ दही देबाक संयोग लागि जाइनि तँ कात करौट सँ खखोड़ि कऽ देथिन आ बूढ़ो गिरहतनो तँ बीचमे सँ पनिगरहे।

जेठक मास, कड़-कड़ौआ रौद, बसातक नाम पर एकटा पात पर्यन्त नहि डोलैत। से आइ खखनाकेँ घर सँ तास खेल-यनाइ छोड़ि, बाहर जा महिस फोलबाक इच्छे ने होइत छलैक। छाहरिक घड़ी अपन रेखा पार कऽ चुकल छलैक।

एतबे मे एकटा अजोद्ध साप कलमक आड़ा पर रोपल पतरका गम्हारि पर कतऽ दन सँ आबि हनहनायल चढ़ि गेलनि। बूढ़ा आङन सँ सहथ अनबाक हेतु दौड़ल अयलाह। महिसिक घर दिस नजरि गेलनि। महिसकेँ बन्हले देखि खखना पर क्रोध भेलनि। आङनमे पैर दैत छथि तँ भनसा घरक ओसारा पर खखनाकेँ खिखिआइत देखलथिन। एक्के

पटिया पर एक कात कनेना आ दोसर कात खखना बैसल, बीचमे तास पसरल आ कनेना अङैठी मोड़ करैत दूनू बाँहिकेँ ऊपर दिस उठौने।

बूढ़ाकेँ तरबाक लहरि मगजपर चढ़ि गेलनि। पाँच सात घड़मेत्रा खखनाकेँ आ दू चारि लात पुतोहुकेँ लगा देलनि। फेर उनटलाह खखनापर गरजैत—सार अछिन्नरे खाइत छथि तकर उमकी लेलकनि अछि आ ई हो अनजनुआँक जनमति कहाँ सँ कपार पर बथा गेलि।

खखनाक चीत्कारसँ घर आङन सभ अनुगुंजित भS गेल। टोल परोसक लोक दौड़ि आयल। बूढ़ी दौड़लीह। कनेनाकेँ ओंघड़ायल देखि बाजि उठलीह—ई की कयलहुँ, हिनका तँ किछु छनि।

तिलसँ ताड़ भS गेल, फोंसरी सँ भोकन्नर भS गेल। गप्पकेँ रातिये मे अण्डा भेलैक, प्राते मे बच्चा भेलैक आ से फरं फरं भरि गाम उड़य लागल। बूढ़ा-बूढ़ी कतहु गाममे मुँह देखयबाक योग्य नहि रहलाह, खखना निकालि देल गेल।

महालक्ष्मी मन्दिरक पाछू मे बैसल खखनाकेँ बुझना गेलैक जे एखनो ओकर पीठ मारिसँ दुखा रहल छैक। फेर आभास होअS लगलैक जे महिंसिक घरक पाछू मे ओ ठाढ़ अछि। खिरकी दS छोटकी गिरहतनी नेहोरा कS कहि रहल छथिन—हमरा लग पाँच सय रुपैया अछि। हमरा बम्बइ कS दS आउ। आब एहि ठाम हमर निर्वाह नहि भS सकत।

बूढ़ा बेटाके चिट्ठी लिखबौलनि। पुतोहुक निन्दा मे जतेक शब्द फुरलनि से लिखबा देलथिन। अन्तमे चिट्ठीकें तार बूझि तुरन्त गाम अयबाक आग्रह कयलथिन। बूढ़ा मनहिंमन विचारि कऽ रखने छलाह जे गामो पर एक परिवारक गुजर योग्य भगवान सम्पत्ति देने छथि। गामे आबि रहताह तँ कोन क्षति।

गामक लंठ छौंड़ा सभ बूढ़ पुरानक सऽह पौलक, खखनाकें आरि कऽ लीढ़मे घोंसिया देबाक योजना बनऽ लागल तकर सुनि गुनि कनेत्राकें लागि गेलनि। ओ एक निरपराध व्यक्तिक हत्या संभावित जानि औंड़ि मारऽ लगलीह आ संगहिं आशंका होअऽ लगलनि जे हमरा पर कलंकक बज्र दाग भऽ जायत।

अकस्मात खिरकी दऽ महिसिंक घरक पाछू दऽ जाइत खखना पर नजरि पड़लनि। एकटा आम जुमाकऽ फेकलनि ओकरा दिस। खखनाक नजरि खिरकीपर पड़लैक। लग सहटि आयल। कनेत्रा ओकरा वस्तु स्थिति सँ परिचित करबैत कहलथिन—मङ्नीमे अहाँक जान चल जायत आ हम कलंकिनी भेल जीवन भरि काहि कटैत रहि जायब। अहाँ हमरा बम्बइ पहुँचा दियऽ।

गहना गुरिया, नूआ फट्टा, टाका पैसा सभ एकटा पेटीमे सरियौलनि आ ओही राति खखनाक संग कनेत्रा बम्बइ कऽ भागि चललीह। चिट्ठी पत्री लिखबाक हेतु भागमन्त बाबू बम्बइक पता दइये गेल छलथिन।

ओमहर भागमन्त बाबूकेँ जखन बापक चिट्ठी भेटलनि तँ विस्मय बिमुग्ध रहि गेलाह । एमहर बम्बइक लम्फ लम्फा ध्यानमे अबनि ओमहर गामक खुरपी कोदारि। एहि सैरसपाटा, नगदी आमदनीक सोभाँमे ओ जिन्सी आमदनी छुछुन्न बूझि पड़नि । संयोगसँ परोसियाक बदली भऽ गेल रहनि। ओ अपन खोली खाली करऽ पर छलथिन । तीन सय पगड़ी लगलनि, खोली लऽ लेलनि आ सपरिवारे बम्बइ मे रहबाक योजना बना गामकऽ बिदा भेलाह । एमहर गाम भरि अनघोल छल जे दछिनवारि गामबाली खखनाक संग उढ़रि गेलथिन ।

भागमन्त जखन गाम पहुँचलाह तँ ने ओ रामा ने ओ खटोला । नाम भागमन्त, मुदा अपना सँ पैघ अभागल दोसर क्यो दृष्टिपथ पर नहि अबनि। सभ समाचार ज्ञात भेलापर सभसँ बेसी क्रोध बापे पर भेलनि । बूढ़ भऽ कऽ पुतोहु पर लात चला देलनि। पुतोहुओ एहन जनिका अयना दू चारिये मास भेल होइनि । ने लतियौने रहितथिन ने ई दुर्घटना भेल रहैत । दूनू बापुतमे खूब त्वंचाहंच भेलनि। एकभाग खखनाक संग स्त्रीकेँ पड़ा जयबाक ग्लानि; दोसर दिस समाजमे होइत खिधांस, तेसर बापक सग झगड़ा, चारिम मायक रूसब सभ मिलिकऽ भागमन्त बाबूक मानसिक सन्तुलन बिगाड़ि देलकनि, विक्षिप्त सन भऽ गेलाह। एक दिन गामसँ उठि कतहु चलि देलनि । गामक लोक बुझलकनि जे बम्बइ चल गेलाह आ बम्बइक लोक बुझनि जे गाममे छथि ।

जल समाधि] [नबासी

खखना जखन बम्बइ पहुँचल तँ एहि महानगरीमे मोन औआय लगलैक। नाम ठेकान रहितहुँ कतेक खाक छानऽ पड़लैक तखन भागमन्त बाबूक डेरा भेटलैक, किन्तु भागमन्त बाबूक पते नहि। गामक ठेकान पता कहने छलैक। दू तीन दिनतँ नीचाँ धरती आ ऊपर आकाशमे निर्वाह कयलक, मुदा बादमे परोसियाकेँ दया आबि गेलैक। एकरा सभकेँ भागमन्त बाबू वला खोलीमे तत्काल शरण दऽ देलकै। आवास तँ भऽ गेलैक, किन्तु भोजन खर्च कोना चलय? एक डेढ़ मास तँ कनेञाक लगक टाकासँ चललैक एहि आशा प्रत्याशामे जे भागमन्त बाबू गामसँ आइ अबैत छथि तँ काल्हि अबैत छथि। खखना कतहु कोनो नोकरीक जोगाड़मे घुमितो रहय। किछु चिन्हार जनार लोकसँ भेटो भऽ गेल छलैक, किन्तु ई भागमन्त बाबूक स्त्री थिकथिन तकरा रहस्ये बनौने रहल। एमहर कनेञाकेँ पूर्णमास भऽ गेलनि आ अस्पतालमे एकटा कन्या जन्म लेलकनि। एहि दुःखक समयमे जे ओ जन्म लेलकनि तेँ ओकर नाम दुखनी रखलथिन। अस्पतालेमे एकटा सेठानीकेँ सेहो बच्चा भेल रहैक। सेठानी ओहिमे मरणासन्न भऽ गेल रहैक। ओकरो बच्चाकेँ यैह दूध पिया देल करथिन।

यैह संयोग भेलनि। ओ सेठ हिनका लोकनिकेँ आश्रय देलकनि। खखना ओकरा टेल्ह सभके खेलयबाक, स्कूल पहुँचयबाक, ताक हेर करबाक काजपर बहाल भऽ गेल। कनेञा अपना बेटीकेँ बिलायती दूध पियाबथि आ सेठक नेनाकेँ अपन दूध। एहि तरहेँ जीवन जाय लगलनि।

[जल समाधि नब्बे]

ज्योतिषीक कहला पर सेठ स्त्रीक ग्रह शान्त्यर्थ एकटा अनुष्ठान कराबऽ लागल। ब्राह्मणी जानि अनुष्ठानोक सभटा ओरियान कनेञ्जके देल गेलनि। पण्डितजी जहाँ आसन पर अयलाह कि हुनका चकबिदोड़ लागि गेलनि। आश्चर्य मिश्रित स्वरमे कहलथिन -चानो दाइ थिकहु अय! कनेञा अपन नाम सुनि चौंकलीह। तखन दाढ़ीक झोंझमे नुकायल मुँहके चिन्हलनि-ई तँ पुरोहितक गामवला ओझा थिकाह। ओ बेचारे स्त्रीक हत्याकऽ एहि दाढ़ीक झोंझमे अपनाके कानूनक आँखिसँ नुकौने छलाह। आब तँ महामृत्युंजयक जपक संग कनेञासँ गप सप पूरा होअऽ लगलनि।

आब अनुष्ठानी महोदय कनेञाके अपना जालमे फँसयबाक उपक्रममे लागि गेलाह। फुसियौने परतारने जखन ओ सोझ नहि भेलथिन तँ भण्डा फोड़ि देबाक धमकी देबऽ लगलथिन। कनेञा बेचारी जे एकटा अपन लोक पाबि आश्वस्त भेल छलीह से उनटे सिद्ध भेलनि। अपन सतीत्वक रक्षा जे एतेक यत्नसँ करैत आबि रहल छलीह ताहिपर आँच लगबाक आशंका दृढ सँ दृढ़तर होइत गेलनि। निरीह, अबला एवं अनाथके जीवन भार होअऽ लगैत छैक। आत्महत्याक अतिरिक्त आन कोनो बाट नहिं सुझलनि। ओ एकटा पत्र लिखलनि—

चि० खखन! शुभाशिष।

हमरा बुझना जाइत अछि जे पूर्व जन्ममे अहाँ हमर बेटा छलहु अथवा भाय। आजुक युगमे बेटो भाय एतेक नहिं

करैत छैक। हमरे द्वारें अहाँके कलंकित होअऽ पड़ल, घर-द्वार, माय-बाप सभक त्याग करऽ पड़ल। एहि परदेशमे भरि-भरि राति अहाँ बाहरमे हमरा हेतु कष्ट कटैत रहलहुँ। अपनो लोक अपना लोकक हेतु एतेक छिद्दति उठयबाक हेतु तैयार नहिं होइत छैक। अहींक उदारताक फल छल जे एहि जन्ममे हम अपन सतीत्वक रक्षा कऽ सकलहुँ। शास्त्र पुरान जँ सत्य थिक तँ हम अगिला जन्ममे पुनः अपना पतिकेँ अवश्य प्राप्त कऽ लेबनि। एहि जन्ममे तँ हमरा कलंकिनी जानि ओ त्यागि देलनि, मुदा हम अपना सतीत्वक बलेँ अगिला जन्ममे हुनका प्राप्त करबाक आशा लऽ एहि जीवनसँ मुक्ति चाहि रहल छी। हमरा ई बोध भऽ रहल अछि जे आब हमर सतीत्व एहि नगर-मे नहिं बाँचत। यदि हम सतीत्वक रक्षा करऽ लागब तँ हमरा एहू ठाम कलंकित जीवन बिताबय पड़त। अहाँक भरोस पर हम दुखनीकेँ छोड़ि समुद्रक शरणमे जा रहल छी। जे अनकर रक्षा करैत छैक, भगवान तकर रक्षा करैत छथिन।

अहींक छोटकी गिरहतनी

खखना जखन ड्यूटी परसँ घूरिकऽ आयल तँ ओ लिफाफ भेटलैक। लिफाफ फोलि पत्र पढ़ि ओ सन्न रहि गेल।

हम जनिकर सतीत्वक रक्षाक हेतु दू बरख धरि घोर तपस्या करैत रहलहुँ, घर छोड़लहुँ, गाम छोड़लहुँ, संग समाज, कुटुम्ब परिवार सभकेँ छोड़ि देल आ से नवकी गिर-हतनी हमरा बिनु किछु कहनहिं हमरा छोड़ि चलि देलनि ?

[जल समाधि

विरानबे]

हम असरा लगौने रहलहुँ जे जहिया छोटका मालिक भेटताह तहिया हुनकर वस्तु आपस कऽ कलंकक एहि दागकेँ छोड़ा सकब। ओकर मोन जेना उन्मत्त भेल जाइक।

दुखनीकेँ सेठक जिम्मा लगबैत निवेदन कयलकनि जे दुखनीक माय अपनेक बेटाकेँ दूध पियाकऽ पोसलक। दुखनी आब अन्न खयबाक जोगर भऽ गेलि अछि। हम एकरा घर पर चिट्ठी लिखि देलियैक अछि। अपनहुँकेँ पता दऽ दैत छी। जहिया कहियो एकर अपन लोक अबैक, ओकरा दुखनी सुंभा देबैक।

भागमन्त बाबूक पिता नामेँ पत्रमे लिखलकनि—

बूढ़ा मालिककेँ प्रणाम।

छोटकी गिरहतनी समुद्रमे कूदि अपन हत्याकऽ लेलनि। हुनका एकटा बेटी भेल छलनि जे एहि पता पर सेठक ओहि ठाम सुरक्षित छथिन। अहाँ धर्ममे ठाँव देब आ एहि अनाथकेँ एतऽ सँ लऽ जयबैक। टाका हम पठा रहल छी।

अहाँक चरण सेवक—खखना।

एतेक दिन धरि बम्बइमे लोक बुझैत छलैक जे ई स्त्री बेटी खखनाक थिकैक। स्त्रीक संस्कार देखि लोककेँ छगुनता अवश्य लगैक, किन्तु तकरा क्यो व्यक्त नहिं कयने छल। एहि महानगरीमे एतेक पलखतिये ककरा छैक जे एकर तह धरि जयबाक चेष्टा करैत।

आब ई भेद फोललक जे ओ हमर स्त्री नहि, गिरहतनी छलीह तादि पर लोक विश्वास कियेक करौक? सभ यैह बुझैक

जे अपन इज्जति चल गेलैक तकरा झाँपन देबाक हेतु किछु लाथ करैत अछि ।

खखना अपना जनैत एहि रहस्यक उद्घाटन एहि हेतु कयलक जे ओकरा समाजसँ सहानुभूति भेटतैक, मुदा तकरा बदलामे भेटलैक भर्त्सना, व्यंग्यवाण, अविश्वास । आब ओ कोन मुँह लऽ कऽ गाम जायत अथवा बम्बइयेमे रहत ?

समुद्रक तरंग महालक्ष्मीक मन्दिरक पाछूमे बनल महावीरजीक मन्दिरसँ टकराइत छलैक आ नवकी गिरहतनीक स्मृति-तरंग एकरा हृदयसँ टकरा रहल छलैक । समुद्रक गर्जनक समक्ष एकरा आन्तरिक वेदनाक चीत्कार तुच्छ नहि छलैक, परन्तु ई मौन चीत्कार संसारक कान धरि कोना पहुँचि सकितैक ?

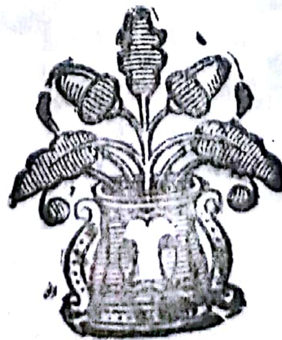
सोझाँमे समुद्र हुमड़ि रहल छल, आकाशमे क्रीड़ा मग्न हवाइ जहाजक झुण्ड गुम्हाड़ रहल छल, रेलक पटरी पर अनुक्षण दौड़ैत रेलगाड़ी हुहुआय रहल छल, सड़क पर असंख्य बस, मोटर, ट्रक गुङुआय रहल छल आ महालक्ष्मीक मन्दिरक द्वार पर टन टना रहल छल घड़ी घंटा ।

एकबेर छपाक् शब्द भेलैक, किन्तु ई के बुझैत जे आत्मग्लानिसँ भरल कोनो आत्मा जल समाधि लऽ लेलक ।



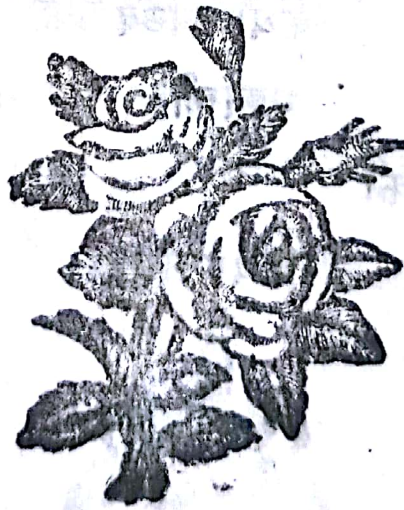
नवरत्न ग्रन्थमालाक अन्य पुष्प

१	राधा विरह	(महाकाव्य)	श्रीयुत 'मधुप'
२	चाणक्य	(महाकाव्य)	स्व० 'बन्धु'
३	कृषक	खण्डकाव्य	श्री माथुर
४	द्रोहाग्नि	,,	श्री लोकपति सिंह
५	बाल रामायण	,,	श्री भुवनेश्वर प्रसाद
६	विकास	पत्र साहित्य	श्री चतुरानन
७	कला	उपन्यास	,,
८	मधुरी	कविता संग्रह	श्री मिहिर
९	वनकुसुम	कविता संग्रह	श्रीराघवाचार्य
१०	अरिपन	,,	श्री अनूप
११	तीन सप्तक	,,	श्री इन्दु
१२	चौंकि चुप्पे	गीत संग्रह	श्रीयुत 'मधुप'
१३	त्रिकुशा	कथा काव्य	,,
१४	सप्पत	एकांकी	श्रीतृप्तिनारायण दास
१५	प्रतिनिधि एकांकी		सम्पादक श्री अमर
१६	धूकल केरा	कथा संग्रह	श्री रूपकान्त ठाकुर



लेखकक अन्य प्रकाशित कृति

१	गुदगुदी	संग्रह कविता
२	युगचक्र	संग्रह कविता
३	ऋतुप्रिया	संग्रह कविता
४	वीर-कन्या	उपन्यास
५	त्रिदागरी	उपन्यास
६	मैथिली आन्दोलन एक सर्वेक्षण	शोध निबन्ध
७	मैथिली साहि परिषदक इतिहास	,,
८	समाधान	एकांकी संग्रह
९	मुहावरा ओ लोकोक्ति	संकलन
१०	त्रिफला	विविध



शुभं

समाप्त।